प्रथम ॥ श्रीसीतारामचन्द्रायनमः श्रीलक्ष्मणा
यनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः श्रीभरथशत्रुघ्नाभ्यां
नमः श्रीहनुमतयेनमः श्रीशिवायनमः श्रीबाबाराम
दासायनमः श्रीमातृचर्णकमलाभ्यां नमः ॥ इस
कालमें कलिनेसंसारमें प्रति प्रवेश किआहै जिस
कार्णसे धर्म्मवेदोक्त मार्गकालोपहोगयाहै अनेक प्र
कारके पाखण्डमतोंनेअधर्मका प्रबृति भया है तत्र प्रमा
ण ॥ निशामुखे षुखद्योतास्तमसा भांतिनो ग्रहाः य
थापापेन पाखण्डाः नहिवेदाकलौयुगे ॥ श्रीमत्भागव
तेषु लिखितं अर्थ जिस प्रकारसे प्राबृटकालरात्रिमें ख
द्योत प्रकास करतेहैं वो अंधकारसे ग्रह नही दखाई
पडतेतैसेही पाखण्डमतोंसे वेदम कलिमलुप्त
होतेहैं तथापि सभको उचितहै की वेदमार्ग रक्षार्थउ
द्योग करे सत्यमें तव धर्मकारक्षकसेवाइ इश्वरके
कोईनहीहै परंतु उद्योगकर्णाइश्वराज्ञाहै तत्र प्रमाण

श्लोक मयावद्धोधर्म सेतुर्गरीयान कालेकाले रक्षणीयोभवद्भिः भूयोभूयोभाविनोभूमिपाला ननत्वानत्वायाच्चिते रामचन्द्रः योगबशिष्टेषु लिखितं: अर्थ श्रीरामचन्द्र नम्रपूर्वक होनेवाले राजों से मांगते हैं की हमारा बांधा हुआ जो धर्म सेतु है सोकालकाल रक्षाकर्ते रहो॥ इस प्रज्ञानुसार सर्मे अल्पबुद्धि श्रीधर्ममूर्त्ति धर्म प्रतिपालक गोब्राह्मण रक्षक श्रीठाकुर अयोध्याबकससिंहात्मज श्रीबाबूमहाबीर प्रसादनारायणसिंह तथा बाबूरामप्रतापनारायणसिंहने वेदशास्त्र पुराणा अवलोकनकरिके सत मार्ग भाषामें ताके सब मनुष्यों की प्रबृत्ति होजाइ वें अनेक सत ग्रंथों का प्रमाण साथ देता हो नृणें कर्ते हैं इस पुस्तक का नाम मुमुक्षु रत्न वो इसमें चारि भाग हैं प्रथम ईश्वर नृणय द्वितीय धर्मादि सिद्धांत उपासना ज्ञानादि नृणय चतुर्थ में

अनेक बस्तु है॰ प्रथमङ्गलाचरणं मत्स्यः कूर्म्मो गणेशः नरहरिस्तुलो वामनो जामदग्निः हंसो विष्णु शिवादिस्सुरपति बिधिभिः कोटिदुर्गाद्यश्च एते वान्येपि सर्वे सकल सुरगणै र्यस्य याता कलांशै तं व्याप्तं ब्रह्मतेजः सकल सुखकरं रामचन्द्रं नमामि॥ अथ इसन्तृणायम॥ इसबात मे शैव शिव को वैश्नव विश्नु को शाक्त शक्ति को इत्यादि अनेक मतन में अनेक प्रकार से इश्वरत्व प्रतिपादन किआ है परंतु वेद में और सत ग्रंथों में केवल रामचन्द्र इश्वर लिखे हैं और वेद क्या रूढ होना धर्म्म है वोत द्वारा चलना धर्म्म है तत्र प्रमाण वेदो नारायणः साक्षात यत्र धर्म्म सनातनः इति बृहन्नारदीयो तथा अर्थ बेद साक्षात्नारायण है उसमें सनातन धर्म लिखा है॥ श्लोक॰ प्रशास्त बिहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः दम्भ हंकार संयुक्ता कामराग बलान्विता श्रीभगवद्गीतायां लितं अर्थ ये प्राणी अ-

शास्त्र बिहित घोर तप करते हैं ते दम्भ हंकार राजस युक्त है ॥ बेद में सर्वोपरि पुरुष है तत्र प्रमाण इन्द्रियेभ्यः परोह्यर्था अर्थाभ्यश्च परान्मनः मनसास्तु पराबुद्धि र्बुद्धेरात्मा महान्परः महतः परमव्यक्तः मव्यक्तात्पुरुपः परः पुरुषान्न परं किंञ्चित्साकाष्ठा सा परागतिः इश्रुतेः अर्थ इन्द्रियों से परे अर्थ अर्थ से मन मन से बहुत परे आत्मा आत्मा से तत्व तत्व से परे जीव जीव से परे पुरुष पुरुष से परे कुछ नहीं है सर्वोपरि परमगति है। इस से सूचित हुआ कि पुरुष सर्बेश्वर है सो पुरुष रामचन्द्र तत्र प्रमाण श्लोक नचैष पुरुषः कश्चित पुरुषोत्तम एव सः श्री राम संज्ञितं धाम परब्रह्म सनातन इति शुक संहितायां लिखितं ॥ अर्थ रामचन्द्र से पुरुष कोई परे नहीं ते सोइ पुरुषोत्तम परब्रह्म सनातन है तथा श्लोक ॥ त्यत्का सुदुस्त्यज सुरेप्सित राज्यलक्ष्मी धर्म्मीष्ट आर्य वच्चसा जदगादरण्यं ॥ ॥

माया मृगं दयित इप्सित म न्व धावत वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दं॥ श्रीमद्भागवते पुलिखितं॥ तथा वेद वेद्ये परे पुंसि जाते दसरथात्मजे वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना॥ श्रीमद्बाल्मिके तथा धर्मात्मा सत्य संधश्च रामो दासरथिर्जेदियो हृषे चाप्रतिद्वंद संएयं जहिरावाणम इत्यादि पूर्वोक्त प्रमाणो से सूचित होता है की केवल राम चन्द्र परं पुरुष हैं और प्रमाणिक ग्रन्थों में ज्योति स्वरूप को श्री राम चन्द्र नख ज्योत्स्ना लिखा तत्र प्रमाण॥ पदद्वैतं ब्रह्मयसातनुभासराम चन्द्रः इति श्रुतेः अद्वैत ब्रह्म जिसके सरीर से भासित है सो राम चन्द्र है॥ पुनः सर्वेषाम् अवताराणाम् अवतारीरघूत्तमः राम पादनखज्योत्स्ना परब्रह्मेति गीयते॥ इत्यगस्त्यसंहितायां॥ तदग्रे नारायण तथा हंसादि मतवाले नारायणादि चौबीस अवतारों के और वैशिव को शाक्त शक्ति को इत्यादि अनेक मतवाले अनेक देवतों को इश्वरत्व प्रति

पारनकतेहैं सो वेदऔरप्रमाणोंकरअन्योंसेपूर्वोक्तस
कलदेवता श्रीराघवकेआज्ञावर्तीदासहैंतत्रप्रमाण ॥ त
स्मिन्साकेतलोकेविधिहरहरिभिस्संततंसेव्यमानेदि
व्येसिंहासनेश्रेष्ठेजनकतनययाराघवशोभमानः यु
क्तोमत्स्यैरनेकैःकिरभिरपितथा नारसिंहैरनेकैःकूर्मै
श्रीनन्दनन्दैर्हयगलहरिभिःनित्यमत्तोमुखैश्चयत्रके
शवबामनोनरवरोनारायणोधर्मजः श्रीहंसः हलधृ
कतथामधुरिपुःश्रीवासुदेवःपरः ॥ एतेनैकविधामहे
न्द्रविधयोदुर्गादयःकोटिशः श्रीरामस्यपुरोनिदेशसु
मुखानित्यास्तदीयपदे । इतिपरत्वसंहितायांइत्यादिपू
र्वोक्तप्रमाणोंसेकेवलराघसर्वेश्वरसूचितहोतेहैं ॥
अबकदापिकोइकोअनेकनबीनग्रंथोंकेदेखनेसेभ्र
मोत्पन्नहोइकीहंसादिनारायणादिरूपकोरामचन्द्र
कहतेहैं सोशास्त्रोक्तप्रमाणोंसेरामचन्द्रसर्वेश्वरन
राकृतिद्विभुजहैं तत्रप्रमाणआनन्दोद्विविधप्रोक्तोमू-

र्त्तिश्चामूर्त्तिरेवचअमूर्त्तिश्चाप्नयोमूर्त्तिपरमात्मानरा
कृतिः॥इतिनारदपञ्चरात्रे॥स्थूलंचाष्टभुजंप्रोक्तंसू
क्ष्मंचैवचतुर्भुजंपरंचद्विभुजंप्रोक्तंतस्मादेतत्त्रयंत्य
जेतइत्यनन्तसंहितायां॥तथा॥योवैवसतिगोलोके
द्विभुजश्चधनुर्धरःसर्वेनिरक्षरातीतवरब्रह्मनराकृति
रामइतिशिवसंहितायांतथा॥रामएवपरंब्रह्मरामए
वपरंतपरामएवपरंतत्वंश्रीरामोब्रह्मतारकमइत्यहनु
मत्युपनिषदे॥ब्रह्माविश्नुमहेशाद्यायस्यांसालोक
साधकःतंरामंसच्चिदानन्दंनित्यंरासेश्वरंभजेइत्यनु
मत्संहितायांइत्यादिवाक्योंसेमुमुक्षुकोंभ्रमछांडि
केराघवकोंनराकृतिसर्वेश्वरद्विभुजजानना चाहिए
तदग्रेजोवैश्नवशैवइत्यादिअनेकमतवालेअपने
अपनइष्टोंकोइश्वरकहतेहैंसोशास्त्रप्रमाणसेसब
देवता श्रीराघवके चर्णांबुजरेखासेजायमानहैतत्प्रम
माणयेवताराबिंभोर्मुग्धजायंतेविश्वहेतवेजेमिरा

मां ब्रिचिन्हेभ्यः संभवंति पुनश्चुनः महाभद्रो महाविष्नुर्जा
यते श्वस्तिकादर्पितदंसेन समुद्भुतो विष्नुर्लोकैकमं
गलः ॥ रेखोर्ध्वया महासंभुः महाजोगेश्वरो भवत् तेन
ब्रह्मा समुत्पन्नो भक्तियोगसिरोमणि शक्तिचिन्हान्म
हामायातस्योमा सारदादयः तस्या एव समुद्भुतं दुर्गाद्या
देवब्रह्म भा मुकुटनष्ट थु जातो हंसात्हंस इति स्मृत इति
महारामायणे शिववाक्ये ऽपो भिन्न भिन्न सकलदेवतावों
कि उत्पन्न का आख्यान साढ़ताली सवां ऽध्याय महा
रामायण में लिखा है इहां प्रयोजन वस्य मुख्य मुख्य
देवतावों की उत्पत्य का कारण लिखगये है इत्यादि
पूर्वोक्ति महत्प्रमाणों से जस अवस्था मे सकल देवता
श्रीराधा के चर्णाम्बुज रेखा से जायमान हे तो उनको स
र्वेश्वर मननाऽनुचित है परंतु श्रीराघव के आवर्ण पा
र्श्व वर्तिकरि कै मानना उचित है तदग्रे शास्त्रों कुबा
क्यों से त्रय अवस्था हे त्रै गुण्य हे और तीनो अवस्था औ रती

नोगुणोकेविभुब्रह्माविष्णुमहेशादिहैंऔएनकीशक्ति
अवस्थाहैसोमहतग्रंथोंकेप्रमाणसेनिस्त्रैगुण्यहोय
करिस्त्रयअवस्थाभेदनकरिकैतुरीयाख्यवस्थाप्राप्त्य
र्थहेतुसर्वेश्वरयातुरियाख्यविभुहैंउनकीउपासना
करनीचाहिएसोतुरीयाख्यविभुरामचन्द्रहैंतत्रप्रमाण
त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुननिर्द्वन्द्वो
नित्यसत्वस्थोनिर्योगक्षेमआत्मवान्।। भगवद्गी
तायांतथाएषसर्वेश्वरएषसर्वज्ञःएषोन्तर्याम्येष
योनिःसर्वस्यप्रभवाप्ययौहिभूतानांनवहिःप्रज्ञंना
तःप्रज्ञनोभयतःप्रज्ञनमप्रज्ञनाप्रज्ञंनप्रज्ञानघमदृष्ट
मव्यवहार्य्यमग्राह्यमलक्षणमचिंत्यमव्यपदेश्य
मेकात्म्यप्रत्ययसारंप्रपंचोपशमंशिवमद्वैतंचचतु
र्थमन्यंतेइतिसर्वस्याधिष्टानंचासौसन्मात्रश्चनि
रस्ताविद्यातमोमोहःमायामायाभासेतिअविद्यात
त्कार्यरहितत्येसआत्माविज्ञेयःसदोज्वलोऽविद्यातत्का-

र्यहीनःस्वात्मवंधहरःसर्वदाद्वैतरहितआनन्दरूपः सर्वाधिष्टानसन्मात्रोनिरस्ता विद्यातमोहमेवेति संभाव्यत्यहंमोतत्सघत्यरंब्रह्मरामचन्द्रश्चिदात्मकःसोहमोतद्रामभद्रपरंमज्योतिरसोहमोमित्यगत्मानमादायमनसाब्रह्मणैकीकुर्य्यान्सदारामोहत्येततत्वतःप्रवदंतितेसंसारिणोनूनंरामएवनशंसयःइश्रुतेःतथातूरीयाजानकीप्रोक्तातूरीयोरघुनंन्दनःउभयोरंसजासर्वेचावताराह्यसंख्यकाः॥सर्वेषांअवताराणामवतारीघुत्तमःश्रुतंदृष्टंमयासर्वेंचिरायजीवनान्मुने॥इतिऋग्वेदहनुमत्युपनिषत्सु॥इत्यादिपूर्वोक्तप्रमाणोंसेनिस्त्वैगुण्यतूरीयाख्याधिपसर्वेश्वरश्रीरामचन्द्रसूचितहोतेहैंतदंशसकलदेवमनुष्यादिकजोजीवसंज्ञाहैतथामायाअक्षरब्रह्मयोक्षराक्षरनिरक्षरान्तर्गतहैतिनसेपरयोनिरक्षरातीतसोइसर्वेश्वरहैसोशास्त्रोक्तप्रमाणोंसेरामचन्द्रसूचितहोतेहैं

अवअन्य कोईश्वरत्वप्रति पादनकर्णाअसतहैतत्र प्रमा
णमायामयादिकंसर्वं पंचतत्वोद्भवंतनुंदृष्टंश्रुतंता
दिकंचैवक्षरमित्याभिधीयते व्यापकस्सर्वभूते
षुयस्पनाशकदापिन जीवात्मासर्वगोमध्यःसो
क्षरोभूधरात्मजो सर्वसाक्षी चिदानन्दोनिर्द्वन्दो
खण्डएवजः परमात्मा परब्रह्म कथ्यतेसनिरक्षरः
असंख्यमित्रवत्तेजोवेदाअपिन यंविदुःसर्वैनिर
क्षरातीतोरामः परतरात्परः। योवैवसतिगोलोकेद्वि
भुश्च धनुर्धरः ब्रह्मानन्दश्चयंरामयेनसर्वप्रतिष्टि
तं॥ भूताक्षरोक्षरश्चासकलांचैवनिरक्षरस्वयंनि
रक्षरातीतंसर्वैवैजानकीपतेः॥इतिशिवसंहितायां
तदग्रेवेदप्रमाणसेप्रणवमंत्रेश्वरऔरतदात्मकसर्वे
श्वरहैसोवेदोक्तप्रमाणोंसे रामचन्द्र प्रणवेश्वरसूचि
तहोतेहैंतत्र प्रमाण अकाराक्षरसंभूतःसोमित्रोविश्व
भावनःउकारक्षरसंभूतसत्रुघ्नस्तेजसात्मकः प्रा

ज्ञात्मकस्तु भरतो मकारोऽक्षर संभवश्चर्य मात्रात्मको
राम ब्रह्मानन्दैक विग्रह श्रीराम सानिध्य वसाद्ध
गदाकार कारिणीउत्पति स्थिति संहार कारिणी स
र्वदेहिनां सासीता भवतीज्ञेयां भूतप्रकृति संज्ञिताप्र
णवत्वात्प्रकृतित्वं वदन्ति ब्रह्मवादिनां॥ इत्यथर्वण
वेदे रामतापिन्यांतदग्रे परमोत्तम यो ब्राह्मण क्षत्रि
यादि वर्णोत्तमयो धर्म है तिसने अन्य धर्मवाले महद्दो
षलगावते हैं की इश्वरत्व बहुत प्रकार से वर्णन है सो
यथार्थ तो यह है की वेद शास्त्रादि प्रमाणिक ग्रन्थों में
इश्वरत्व से वाइराघव मे अन्य तत्त्व प्रति पादन नहीं है
और नवीन ग्रन्थों में बहुत प्रकार से मत प्रति पादन कि
आ है परन्तु पूर्व परोक्त प्रमाणों से सत नहीं है सिद्धा-
न्त एह है की रामचन्द्र सर्वेश्वर पर ब्रह्म हैं शिव दुर्गा
नारायणादि आनके अन्नावत्ती हैं तत्त्व प्रमाणानि ॐ
नमो भगवते श्रीरामचन्द्राय ॐ परमपुरुषाय पर

मदेवायपरमेश्वराय ॐ ततब्रह्मसच्चिदानन्दस्वरू
पायअर्थमात्रात्मकाययेनेदंविश्वंभवतिस्थिति
नासंकलामात्रंचयेनेदं ब्रह्माविश्नुरुद्रादित्यानक
लाकलांसेर्ज्जायमानायेनसर्वदेवताएकलाकलांसे
र्यायमानाइतिसामवेदेब्रह्मसक्ते तथाऽवताराबहू
वः सन्तिकलाश्चांसविभूतयः रामएव परब्रह्मसच्चि
दानन्दमव्ययम्॥इतियजुर्वेदे भरद्वाजसाखायां॥
तूरीयाजानकीप्रोक्तातूरीयोरघुनन्दनः उभेयोरं
सजासर्वेचावताराह्यसंख्यकाः इति ऋग्वेदेहनु
मत्युपनिषत्तु। रमन्तेयोगिनोनन्तोसत्यानन्द
चिदात्मनिइतिरामपदेनासौ परब्रह्मविधीयते।
इत्यथर्वणवेदे रामतापिन्यां॥ वेदवेद्येपरे पुं
सिजातेदसरथात्मजेवेदप्राचेतसादासीत्साक्षा
द्रामायणएवमतथाश्रीयःश्रीयस्यात्मभवोप्र
भुश्चइतिवाल्मीके। श्रीरामेतिपरंजाप्यंतारकं

ब्रह्मसंहिकंइतिसनत्कुमारसंहितायां॥ श्रीसां श्रीरामनाम्नाष्ट्रजनयः सिद्धाभवन्तिहीवीजमोंकारासोहस्त्वमुक्तमितिश्रुतिःइतियाज्ञवल्कसंहितायां॥ परात्परतरंतत्वंसत्यानन्दंचिदात्मकम्मनसाशिरसानित्यंप्रणमामिरघूत्तमं॥ इतिसनत्कुमारसंहितायां। नारायणोपिरामांशः शंखचक्रगदाधरःइतिवाराहसंहितायां। आनन्दरूपो निष्यरिमाणएषलोकेश्चेतस्माद्रमतेइतिसाण्डिल्यशाखायां॥ यथाव्यादिप्रदीपेनसर्वदीपप्रबोधनं॥ तथासर्वावताराणामवतारीरघूत्तमइत्यगस्त्यसंहितायां। विश्नुकोटिप्रतीपालंब्रह्मकोटिविसर्जनंरुद्रकोटिविमर्दंचैमातृकोटिविनाशनम्। कामकोटिकलानाथंदुर्गाकोटिविमोहनं। सर्वसोभाग्यनिलयंसर्वानन्देकदायकं कौशिल्या नन्दनंरामंकेवलंब्रह्ममव्ययम्॥ महाशंभुसंहि

तायां। रामेति लक्ष्मी बचनम प्यापीश्वरवाचकः। ल
क्ष्मीपतिं गतिं रामप्रवदन्ति मनीषिणः। रशब्दो विश्व
वचनो मश्चापीश्वरवाचकः विश्वानामीश्वरो यो
हि तेन रामः प्रकीर्त्तितः। रमते रमया सार्द्धं न रामं वि
दुर्ते बुधाः॥ रमणं रमणस्थानं रामनाम विदो वि
दुः। इति ब्रह्मवैवर्त्ते। यस्यामलं नृपसदः सुयशो
धुनापि गायान्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेन्द्रपट्टं तन्न
कपालवसुपाल किरीटयुष्टं पादांबुजं रघुपते
स्सरणं प्रपद्ये श्रीमद्भागवते। पूर्णः पूर्णावतारश्च
स्यामो रामो रघूद्वहः अंशानृसिंहकृष्णाद्या रामस्तु
भगवान्स्वयं इति ब्रह्मजामले। तथाशिव शिवः
स्यात मशिवोशिवश्च कृपानिधिर्दाशरथिस्सः रामः
परात्परः क्षोणीविभुरत्यतन्त्रो न यन्त्रिणा जातिपरस्य
माहु इति स्कन्दपुराणे। सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वा
नन्दैकनायकं कौसिल्यानन्दनं रामं केवलं ब्रह्म

म. व्ययंइतिनारदपंचरात्रे॥श्रीरामस्यकलांशा
द्वै अवताराः भवंतिहि कोटिकोटिश्चकार्य्यार्थे
सिंधौवीचीवमेमुनेः महाभारते अ सेषवेदात्म
कमादिसंज्ञंमजंहरिंबिश्नुमनंतमाद्यमप्रपार
संवित्सुखमेकरूपंपरात्परंराममहंभजामिः इ
तिसनत्कुमारसंहितायांः इत्यादिपुर्वोक्तप्रमा
णोंसेश्रीरामचन्द्रसर्वेश्वरसुचितहोतेहैं अन्य
कोईश्वरकहनावामाननावाऐसेउत्तमधर्म
मेंवहुधाइश्वरत्वकादोखलगानाअनुचितहै
ब्रह्माण्डानामसंख्यानांब्रह्माविश्नुहरात्मनाम्
उद्भवप्रलयेहेतु रामएवपरपुमान्इतियर्गुवेदे
हिरण्यगर्भसंहितायांतदर्थ श्रीरामचन्द्रनेस्वायं
भुमनुवोसतरूपाकेतपसेमनुष्यावतारहोका
रस्वभक्तउद्धारनार्थलीलाकियावोउनकेइस्व
रत्वगुणश्रीमद्वालमिकियरामायणादिमेंलिखाहै

वौश्रीरामचन्द्रने विरसिंहवौचीनलंकाके
तथाजनकपुरवासियं इस्त्रियोंके तपफलार्थ कृ
श्नावतार होकर लीलाकिया वौराम कृश्नमें भेद
नाहिहै नारायणादि अन्यावतार श्रीरामके अंसा
कलासे है कृश्न स्वयराम हैं तत्र प्रमाण रामस्तु कृ
श्न रूपेण रामरूपेण माधव तयोर्भेदं न कर्तव्यं
कृत्वापापमवाप्नुयात इति सत्योपाख्याने॥ तथा
विज्ञानफलदं दिव्यं मोक्षैकफलसाधनं नमस्क
त्य प्रवक्षामि रामकृश्न जगन्मयं इति सनत्कुमा
रसंहितायां। सैव श्रीजानकी देवि बृषभानुसुता
भवत श्रीरामस्तु तदा साक्षात कृश्नरूपीदयानि
धेः इति शुकसंहितायां वौविरसिंहकि कथाविस्ता
रपुर्वक सत्योपाख्यान में लिखा है इत्यादि प्रमा
णोंसे रामकृश्नमें भेद न करना चाहिये अरु श्रीरा
धेकी जो आदि सक्ति महामाया हैं वह श्रीजानकीजु

हैं वो अन्यमत वाले दुर्गा कालि रमा इत्यादि को आदि सक्ति कहते हैं सो ए सब श्री जानकिजु की दासअनुवर्ति है तत्र प्रमाण स्त्रियस्या कलाकलांसेन जाता नार्यस्तियाख्य: सर्वे रामार्पितधिया जानकी पारिचारिका इति अथर्ववेदे हनुमत्युनिषत्सु। सीताकालांसाद्भवः शक्तयः संभवन्ति ही यासां कलाकलांसेन संभवन्ति श्रीयादयः। इति महाशंभुसंहितायां॥ श्रीरामसान्निद्धि वसाज्जगदाकार कारिणी उत्पति स्थिति संहार कारिणी सर्वदेवानां सा सीता भवती ज्ञेया मूलप्रकृति संज्ञता॥ इति श्रुतेः हरिहर कमलासनादि भूतिं तव करुणावर लब्धुमंगलम। रघुवरवरवहन्ति त्वदीयमगाणितधनवबन्धनं वै भवं न जाने इति मार्कण्डेय संहितायां ब्रह्माविश्नुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो ऋषयस्तथा दुर्गाश्रियादयश्चैव जानकी परिचारिका इति महाभारते वनपर्वणि इत्यादि पूर्वोक्त प्रमाणोंसे ए व शिवा रमादिकों

आदि शक्ति कहनाप्रसत्त है परंतु श्रीजानकीजू के
पार्श्ववर्त्ती दासी करिकै मानना उचित है। प्रकृ बहुत म
तोंने बहुत प्रकार से परम धाम वैकुंठ कैलाशादि कों
लिखा है परन्तु शास्त्र प्रमाणों से गोलोक परम धाम सू
चित होता है तत्र प्रमाण महद्व्योकोस्थितरूर्द्धमेककोटि प्रमाणतः। कोटिद्वयेन विख्यातं जनलोकं व्यव
स्थितम। चतुष्कोटि प्रमाणस्तु तपोलोको विराजितः
उपरिष्टात्ततः सत्यमष्टकोटि प्रमाणतः अपः प्रव्याप्त
कौमारकोटिषोडश संभवं॥ तदूर्द्धे परिसंख्यातं मु मा
लोकः सुनिष्ठितः शिवलोकस्त्वदूर्न्तु प्रकृत्याच स
मागतः विवश्वस्य परतो वृत्तिः शिवस्य पुरतो बहिः ए
तस्माद्बहिरावृतिः सप्तावरण संज्ञका। तदुर्द्धे कोटि प
ञ्चाशत्क्रमाद्दशगुणात्परम। भूमिरापोनलोवायुखं
महच्च निधापरं प्रकृतेर्महामूलेन सप्तावरणसंज्ञकः
तदर्द्धे सर्वसत्वानां कार्य्यकारणनामयम। निलयं पर

मं दिव्यं महावैश्नवसंज्ञिकम। सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात। यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतं व्यवस्थितम। उद्भवन्ति विनश्यन्ति कालज्ञानविद्वनैः। यदंशेन समुद्भूता ब्रह्माविश्नुमहेश्वराः। एत गुह्यतमस्थानं दातुवाञ्छितोहितं। तदूर्द्धन्तु परं दिव्यं सत्यमनवस्थितम। न्यासिनां योगिनां स्थानं भगवन्द्रवनात्मनाम॥ महाशम्भुर्मोदते तत्र च सर्वशक्तिसमन्वितः। तदूर्द्धं तु परं कान्तं महावैकुण्ठसंज्ञिकम वासुदेवादयस्तत्र विहरन्ति स्वमायया तदूर्द्धन्तु स्वयंभातो गोलोक प्रकृतेतरः वाङ्मनो गोचरातीतः ज्योतिरूपः सनातनः तस्य मध्ये पुरं दिव्यं साकेतमिति संज्ञिकम कोटिसूर्य्य प्रतीकाशं परमानन्ददायकम तन्मध्ये जानकी देवी सर्वशक्तिनमस्कृता। तत्रास्ते भगवान रामः सर्वदेवशिरोमणिः इति हिरण्यगर्भसंहितायाम इश्वर के नाम अनेक हैं औ कलिमे फल

प्रद है परन्तु राम नाम सर्वोत्कृष्ट है तत्र प्रमाण॥ परमे
श्वरनामानि सन्त्यनेकानि पार्वती परन्तु॥ रामना
मेदं सर्वेषां उत्तमोत्तमः॥ इति शिवसंहितायां॥ त
था रामरामेति रामेति रमेरामे मनोरमे सहस्रनाम
ततुल्यं रामनाम वरानने॥ इत्यगस्त्यसंहितायां॥
तथा नाम्नां सहस्रनामानि यत्फलं लभते नरः तत्फ
लं लभते विप्रः रामनामैव कीर्तनात् इति ब्रह्मवैव
र्त्ते॥ जानना चाहिये की सकल वेदशास्त्रादिने सम्पू
र्ण पूर्व कथित वाक्यों का प्रमाण हजारों श्लोक लिखा है
परन्तु यहां दो दो एक एक श्लोक प्रमाणार्थ लिखि दि
या है अब सभकों चाहिये की वेद में वाक्यारूढ होकर
श्रीरामचन्द्र कों सर्वेश्वर सूचित करें और सगुन नि
र्गुण में सुक्ष्म भेद है की श्रीरामचन्द्र जब भक्तों के कार्य्या
र्थ मनुष्यावतार लेकरिके सगुन कहलावते हैं वो
सगुन निर्गुण दोनो एक वस्तु है इस्वर रूप याख्यां

समाप्तंइति॥ ॥

द्वितीय ग्रंथधर्मसिद्धान्ताख्यानं लिख्यते वेदमें मोक्षकीतिनिराहहै प्रथमकर्म द्वितियोपासना त्रीतीयज्ञान प्रथम पंथकर्मकाण्ड जिस्का सिद्धान्तकर्मकरना चाहियेवोकर्मसे मोक्षहै तत्र प्रमाणः अथातोकर्मजिज्ञासुः इति पुर्वमिमासायां तथाकर्मणैवसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः लोकसंग्रहमेवापिसंपस्यन्कर्तुमर्हसि इतिभगवद्गीतायां॥ औकर्मकाण्डमेंकर्मोत्तम ब्राह्मणकर्म है औ ब्राह्मणका इष्ट मंत्र गायत्री है गायत्र्यार्थ से ब्राह्मणका इष्ट जाननाचाहिये की गायत्री जिसका मंत्र है औही ब्राह्मणका इष्ट है सो शास्त्र प्रमाणसे गायत्रीअधिपश्री राघव सच्चित होते है तत्र प्रमाणानि ततश्च

तुर्विंशत्याक्षर गायत्र्याख्यपरब्रह्मविद्याविला
सभूतं श्रीमद्रामायणं तदर्थं चतुर्विंसतिसह
स्रश्लोकैश्चकार इतिश्रुते। तथा श्लोके चप्र
तिसाहस्रं प्रथमे प्रथमेक्रमात गायत्र्याक्षरमे
कैकं स्थापयामास वै मुनेः गायत्र्यास्त्रीणि चत्वा
रद्वेद्वेत्रीण्यथषट्क्रमान चत्वारि सप्तकाण्डे
षु स्थापिता। न्यक्षराणित्विति इति पद्मपुराणे
कृष्णवाक्यं॥ कदाचित कोई अक्षरार्थ से गाय
त्र्याधिप सुर्य को कहे तौ प्रथम तौ वेदार्थ मनु
ष्यों को कहना न चाहिये दुसरे जब की महानु
भाव श्रीकृष्ण इश्वरने मुखाम्बुजसे अर्थ कहा
है तब उसका अर्थ अन्य नहीं हो सक्ता तीसरे
ब्रह्म गाइत्रिका देवता ब्रह्म है वो सुर्य ब्रह्म नहि
है तिस्से [illegible] सेवाइ रामायण के अन्यार्थ नहि हो
सक्ता चौथे कदाचित कोइ न माने तो अक्षरार्थ

भिरामचन्द्र परसुचित हैततसव्दकाअर्थ ब्र
ह्म है प्रमाणतत ब्रह्म रामचन्द्राय इतिश्रुतवो
सविता नाम राघौका है भुर्भुवः स्वस्तिरस्ता र
सविता प्रपितामहः इति महाभार्ते तथास वि
ताराघवः श्रीमान परमात्मा सनातनः इति व
सिष्टसंहितायां इत्यादि पूर्वोक्त प्रमाणें से ब्राह्म
णक्षत्रियादि कर्मकाण्डियों को रामोपासन हो
नाचाहिए अन्योपासन करना असत है तत्र प्र
माण श्रीसीताराममन्येन देवेन सहदुर्मति
साधारणं सकृधूते सोत्य जानात्यज्योंः त
थाचतुर्वेदी च जो विप्रो बासुदेवं न विन्दते वे
दभार संमाक्रांता सवै ब्राह्मण गर्धपः इति बसि
ष्टनोक्तः ॥ औ कर्मकाण्ड में प्रथम दिक्षा धार्ण
कर्म है परन्तु इसमें अनेक मत वाले अनेक
मन्त्र ग्रहणार्थ आदेश कर्ते हैं यथार्थ वेदप्रमाण

ण से ब्राह्मण क्षत्रियादि उत्तम बर्णो को सेवाइ
श्री मंत्रराज षडक्षर तथा द्वादशाक्षर राम
मंत्र को अन्य मंत्र अधिकार नहीं है तत्र प्रमा
ण। इत्योंतत ब्रह्मात्मिका सच्चिता नन्दाख्या
इत्योपासितव्यमकारः प्रथमाक्षरो भवति
अर्धमात्राचतुरक्षरो भवति बिन्दुः पञ्चमा
क्षरो भवतिनादः षटाक्षरो भवति भवतारक
त्वात्तारको भवति तदेवतारकं ब्रह्मत्वंविद्धि
तदेवोपास्यमिति ज्ञेयंगर्भजन्मएरामाय
नमः ध्येषातारकंब्रह्मनामकं इति ब्रह्म सं
हितायां। मुमूर्षोदक्षिणे कर्णेयस्यकस्यापि
वास्वयंउपदेक्षसिमन्मंत्रं स मुक्तो भवतिश्व
यम। इत्यगस्त्यसंहितायां। गत्वा गत्वा निनि
वर्तन्ते सूर्य चन्द्रादयो ग्रहाः नानिवर्तन्ति वै
राजो द्वादशाक्षरचिन्तकाः। तदग्रेकर्मकाण्डी

को धनुषवर्णांकित अवश्य चाहिए तत्र प्रमाण धनुर्बाणादि चिन्हांको धारणं तिलकान्वितं तुलशी काष्ट माला ख्यं तं जानीति सु वैष्णवं ॥ इति ब्रह्माण्ड पुराणे। रामायुधाभ्यां तप्ताभ्यां संतापामुद्रयात्य हं अंकिताथेम हाप्राज्ञो नित्य मुक्ताश्च नित्यदा। इति शिव संहितायां। धन्वनांकितो धन्वनागा धन्वनाजीजयं मुधन्वनाती व्रास मदो जयेम धनुश्शत्रोरपका मंकृणोमि धन्वना सर्वा प्रदीशो जयं। इति श्रुतेः तदंग्र कर्णिकाराडि को उर्द्ध पुण्ड तिलक तुलशी काष्ट माला धारण करना सत है अन्य तिलकादि असत है तत्र प्रमाण उर्द्ध पुण्ड हरिपदा कृति मात्मनो निधारयति मध्याछिद्रमूर्द्ध पुण्ड यो धारयति स परस्य प्रियो भवति इति श्रुतेः उर्द्ध पुंड तु विप्राणां सततं श्रुतियो दि

तमउर्द्धपुण्ड्रो मृदा स्वभाले ललाटे य स द्दृष्य
ते सर्वपापविशुद्धात्मा जरामरण संसारमहत्भ
यान्तारयतितिस्मा त्पुच्यते तारकमिति श्रुतेः त
राममेव परं मंत्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवता गायत्र्यश्च
महात्मानो मुक्ता जन्मा भवां वुधौ एतन्मंत्र
मंगस्त्यो वै जप्त्वा रुद्रत्वमाप्नुयात। ब्रह्मत्वं
कास्यपं चैव कौशिकस्तु मुरेतसां इति हारी
तास्मृतौ। राममेव जपन्मंत्रं रुद्रस्त्रिपुरहा
रकः ब्रह्महत्यां विनिर्मुक्तो पूज्यमानोपि म
त्सुरैः इति नारदपञ्चरात्रौ। प्रधारि रुद्र काश्यं
तुः सर्वेषांति लेक जीविनां दिशे देतन्महामं
त्रं तारक ब्रह्मनामक तस्य श्रवणमात्रस्य
सर्व एव दिवंगताः स याति हरि मन्दिरं रुद्रा
र्चनं त्रि पुण्ड्र च यत्पुराणेषु गीयते क्षत्र विट
शूद्र जातीनां नेत्तरेषां तदुच्यते। इति वसिष्ठ

संहितायां धारणात्पालनात्सिक्तात्नमस्य र्शनकीर्तनात्तुलशीदहते पापंनृणांजन्मा र्जितंखगइतिगरुडपुराणे तदग्रेकर्मकाण्डी को अनेकरामव्रतादिऔरतत्तत्कालकेउत्सव करना अगस्त्योक्तमार्गसेउचितहै परन्तुव्रतो त्तमरामनवमीजन्माष्टमी हैतत्रप्रमाण एवंयः कुरुते भक्त्या श्रीरामनवमीव्रतं अनेक जन्मा र्जितानिपातकानिबहूनिवै भस्मीकृत्यव्रजे त्येवतद्विष्णोपरमंपदं। अकृत्वारामनवमी व्रतंधव्रतानांव्रतमुत्तमम। व्रतान्यान्यानिकुरु तेनतेषांफलभाग्भवेत। इत्यादिप्रमाणिकव्र तोत्सवोंकाविधिनृणयादिरामार्च्चनचन्द्रिका मेलिखाहै इहांकार्य्यीसूक्ष्मसेलिखागया तदग्रेअनेकरामतीर्थादिदर्शनस्नानकरनाअ वस्यचाहिए। परन्तुसर्वतीर्थोत्तमश्रीअयोध्या

बृन्दाबन न्चित्रकूटादि परब्रह्मक्षेत्रहै तत्रप्रमा
ण। यायोध्या पुरीसासर्व वैकुंठा पिश्नेष्टंश्राधा
रमूलप्रकृतेः परातत्सतब्रह्ममपी विरजोत्तरा
दिव्यरत्नकोध्यातस्यान्नित्यमेवसीतारामयो
विहारस्थलमस्त्विति श्रुतेः। तथापुरातनमिदं
स्थानंमस्माकंतुतदेवहीकौशलाख्यंपुरंदिव्यं
फत्नएपिजिनस्वरम्। इदंत्रैलोक्यमखिलं प्र
लयेनविनस्पति। अविवस्वरमक्षैकमयोध्या
पुरमभ्दुतं। इतिशुकसंहितायां। परंतुस्वर्गत
सेष्टयोध्येयंसुरदुर्लभामाहाम्पतयश्नेष्टस्व
र्गादपिवराननां। स्वर्गवासात् पुनर्जन्ममरणं
विन्दतेनृणां। अगामृताश्चवैकुण्ठमूर्द्धं गछंति
मानवाः अयोध्यानसमोकिञ्चित्नस्वर्गभूतले
पिवा अकारोवासुदेवस्यायकारस्तु प्रजापति
उकारोरुद्ररूपस्तुतां ध्यायंतिमुनिश्वराः ब्रह्म

द्रवमिदं भद्रे नास्त्यस्या उपमा क्वचित्तयस्य पादतलोज्ज्वालो गंगा भागीरथी क्षितौ महिम्नां क्वापि गंगाया पारशास्त्रे न दृश्यते सरज्वा महिमानं को वेत्त्य लोके च पण्डिता इति सत्यो पाख्याने इत्यादि पूर्वोक्तकर्मों में अनेक असत मत वाले अनेक पन्थारूढ करते हैं सो पूर्वदत्त प्रमाणों से सिद्धांत वस्तु यो है वह लिखा है कदाचित कोई श्लोकादि असत प्रमाणों में है वह सत नहीं है तत्र प्रमाण। श्रीरामव्रतादन्यत व्रतं सर्वार्थसाधनम् नरामराधनादन्यो यत्नो वेदे पि दृश्यते रामदासात्परो धर्म्मो यस्मिन्नन्यो निरुच्यते शास्त्रं तन्न्लेक्षबुद्धानां विश्वसेन्न विचक्षणः। इत्यगस्त्यसंहितायां॥ इस वाक्य से सूचित होता है की जो अन्य नवीन शास्त्रादि में अन्य कर्म्मादि है वह म्लेक्ष कर्माधिकारी है अरु कर्मकाण्डी को असत्य भाष

ण परस्त्रीरत तस्करादिकर्म्म परद्रव्य ग्रहण हिं
सामांसादि भोजन अन्यदेवको इश्वरत्व प्रतिपा
दन महान्निन्दा इत्यादि महापातकोंको नकरना
चाहिये अरु कर्म्म अगस्त्यादि प्रमाणिक संहितो
क्तानुकूल करना चाहिए पूर्व से रामार्च्चनचन्द्रि
का नाम ग्रन्थमें सभ प्रमाणिक कर्मों की विधि
लिखी है इस कारण से इस ग्रन्थ में नही लिखा पर
न्तु जिस जिस वाक्य में वाद था उसका पूर्वोक्त प्र
माणानुकूल सिद्धांत लिखा है अरु कर्मकाण्ड कों
अस्नान देवार्च्चन दान हवन जप राम मंत्रादि पु
रच्चर्ण तडागादि उत्सर्ग व्रत तिर्थाटन ब्रह्मणवैश्न
वादि सेवा इत्यादि कर्मों को करना उच्चित है पर
न्तु कर्म का फल मुमुक्षु को इस्वरार्पन करना चा
हिए तत्र प्रमाण। यत्करोसि यदश्नासि यज्जुहो
सिददासियत यत्तपस्यसि कौन्ते यतत्कुरुष्वम।

दर्पणं भगवद्गीता यां ईस्वर बाक्यं अरु चारिबर्ण
हैं चारों का कर्म ईस्वर ने स्वयं श्री मुखाम्बुजसे
गीता में कहा है उसके अनूकूल कर्म करना चाहि
ये परन्तु सकल बर्णाश्रम को रामोपासक होना वे
द वाक्य है तत्र प्रमाण चतुर्वर्णाश्रमानांच राम
भक्ता इति श्रुते ॥ ❋ ॥ इति संक्षेपतो धर्मादि सि
द्धान्ता ख्यानं समाप्तम् ॥ ❋ ॥ अथ ज्ञानो पासना
ख्यानं लिख्यते ॥ वेद मे उपासना ज्ञान मे बहुत
सूक्ष्म भेद है जैसा निर्गुण औ सर्गुन मे वेद के छ अ
ङ्ग है अरु ओन का सिद्धान्त भिन्न भिन्न है सभका
महत्सिद्धान्त रामोपासन होना वेद वाक्य है परन्तु
केवल लिखने से मनुष्यों के बिस्वास न होगा जब
भरि सभ शास्त्रों से ए चित न किआ जाइ इसका
र्य्य विधि शास्त्रों मे या उपासना ख्यान मे प्रश्न है
ओन का उत्तर लिखना अवस्य चाहिए अरु जब तक

प्रश्न नकहाजाइ उत्तर उस्का यथार्थ भासितन
हीहोताइस कार्य्य से सुगम भासा में ताके सभलो
गसमुझैं शास्त्रोंकाप्रश्नोत्तरसहित तत्त्वानोपासना
ख्य सिद्धान्त अरु सर्वोपरियोराम भक्तिहैवेद वा
क्यानुकूललिखा जाताहै प्रथम पूर्वमिमांसाजि
स्कासिद्धान्तकर्म्मोपासनाहै जैमिनउस्के आचा
र्य्यहै प्रश्न प्रथम मोक्षक्यापदार्थहै औ मोक्ष प्रा
प्तिकीक्या यत्न है उत्तर मोक्षस्वर्ग प्राप्ति होना है स्व
र्ग जन्ममर्णसे निवृत्त होनाहै सोवेदवाक्यारूढहो
करयज्ञरामकृष्नार्चनकर्ना अरु मांसादि भोजन
असत्य भाषण परस्त्रीरत इत्यादिदुष्कर्मोंके नक
र्ना अरु बेदमेंजिसबात को आज्ञाकर्नेवा नकर्नेकी
नहीहै उस्को अदृष्ट मानना उस्के कर्नेमें न पुण्य
न पाप मोक्षप्राप्तिकी यत्न है मोक्षार्थज्ञानोपासना
काप्रयोजन नहीहै काहेकी जब दुस्कर्म्म अरु का

मनाका त्याग हुआ प्र नित्य नैमित्तिक कर्म्मों से पूर्व जन्म सञ्चित प्रायश्चित नाश हो गया तब जीव जन्म मरण से निवृत्त हो जाता है इसी को परम मोक्ष कहते हैं नित्य कर्म्म स्नानादि और नैमित्तिक यज्ञादिक को कहते हैं प्रश्नोत्तर दूसरा जीव क्या पदार्थ है उत्तर जीव चेतन है परन्तु इन्द्रियों के सङ्ग से सुख दुख भोगी है प्रश्न त्तीय दुख सुख त्यागार्थ क्या यत्न है उत्तर वेदवाक्यानुकूल कर्म्म कर्ना प्रश्न चतुर्थ संसार नित्य है की अनित्य है उत्तर अनादि है प्रश्न पञ्चम सुख दुख किस्को होता है मृत्यु के अन्तर जीव कहां प्राप्ति होता है उत्तर जीव को अर्द्ध मृत्यु काल के बासनानुकूल शरीर में प्राप्ति होता है प्रश्न नाम नामी में क्या भेद है प्र देवता क्या है अरु नाम सोत्तम कौन है कर्मोत्तम क्या है उत्तर नाम लक्षण है देवता मंत्र है कदापि किसी अन्य बस्तु को देवता

कहैं तौ यज्ञादिक मैंमें हजारो आहुति होती है तब जो एक देवता है तौ हजार आहुति ग्रहण करिके केसे फल द होता है इसे सूचित हुआ की मंत्र फलद देवता है अरु मंत्र से नारायणादि देवता हुए है केवल साक्षी मात्र परम पुरुष मंत्रेश्वर है कर्म से मेय ज्ञादिक मोंत्तम है रामनाम नामोत्तम है जीव ईश्वरमे अभाव है प्रतिमार्चन साधारण कर्म है इत्यादि पूर्व मिमांसा सिद्धान्तानुकूल सूचित होता है कि सर्वेश्वर साक्षी मात्र रामचन्द्र है अरु मंत्र अरु यज्ञाधिप भी होही है तत्र प्रमाण साक्षी मात्रो यज्ञ भुग रामचन्द्रः इति श्रुतेः। तथा मंत्रो मंत्रेश्वर श्रीमान्कोशिल्यानन्दवर्धनः इति कस्यपसंहितायां॥ इत्यादि पूर्वक्ष्प्रमाण से मैमासिकों कों भी रामोपासक होना चाहिय इति पूर्वमिमांसा ख्यान समाप्तम॥ ॥

अथ न्यायाख्यानं वक्ष्यामः। न्यायशास्त्र के गौत

मत्र्प्राचार्यहैं अरु कर्त्तानुकूल मोक्ष है प्रश्न प्रथ
म मोक्षक्याहै मोक्ष प्राप्त्यर्थक्यायत्न है॥ उत्तर॥ए
कइशदोषोंकानासहोनामोक्षहैत्र्प्रो मोक्षप्राप्त्यर्थ
कर्मोपासनाज्ञान हे तु है। अरु जीवको सोरहपदार्थं
काज्ञानसाक्षातमोक्षहै स्नानादिकर्महै सगुनब्र
ह्मध्यानादिउपासना है अरु इश्वर मय संसारमा
ननाज्ञान है प्रश्न द्वितीया पूर्वोक्त षोडस प्रकारका
है उत्तर प्रमाण १ प्रमे २ संसय ३ प्रयोजन ४
दृष्टान्त ५ अध्ययन ६ सिद्धान्त ७ तर्क ८ न्य
णाय ९ वाध १० जल्प ११ वितण्डा १२ हेतुभ्या
स १३ छल १४ अणोत्तर १५ निग्रहस्तमान १६
अरु सप्तपदार्थ अउभी है द्रव्य १ गुण २ कर्म ३
सामान्य ४ विषेस ५ समबाई ६ अभाव ७
प्रश्न तृतीय ३॥ पूर्वोक्त एकविंसति दोष क्या हैं
उत्तर पञ्चकर्मेन्द्रिय एकमनेन्द्रीय छ ६ अरु छ

ओंकानाम १२ अरु ६ ओंकी बिषय १८ सुख १९ दुख २० देह २१ प्रश्न चतुर्थ जीव क्या है उत्तर जीव आत्मा है व्यापक सुख दुख धर्माधर्म भोगी है प्रश्न पञ्च तत्व नित्य है की अनित्य उत्तर। आप १ तेज २ वायु ३ पृथ्वी ४ ए चारो तत्व कार्य्य रूपा निकार्ण रूपानित्य हैं औ आकास तत्व नित्य है आत्मा आकाश काल मन नित्य है अरु आत्मा आकाश काल व्यापक है मन एक देशीय है प्रन्तु गुण व्यापक है प्रश्न ६ एक बस्तु में कइ व्यापक कैसे होसकता है उत्तर जैसे एक वर्तन में रूप रस गन्ध तीनो व्यापक है। प्रश्न ७ सृष्टि कार्त्ता कौन है। माया कौन है। उत्तर। इश्वर विभु व्यापक प्रणव उस्का रूप है औ माया प्रणव से जायमान है औ माया जीव के संसर्ग से संसार की उत्पत्ति है औ जीव कर्मानूकूल इश्वर संसार

कीस्रष्ट कर्ता है अरु जिस अवस्था मे की संसार की उत्पत्ति कही जाइ तौ नास भी है सो कारण रूपी जो संसार नित्य है अरु स्थूल कार्य्य रूपी अनित्य है अरु आत्मा की उत्पत्ति कही जाइ तौ नास चाहिए अरु आत्मा नित्य है काहे की प्रमाण तीनि है प्रथम मध्यम परम महता सो आत्मा परम महत्प्रमाण है। इसे नास मान नही है प्रश्न ॥ ८ ॥ जीव आत्मा मे के गुण है। उत्तर। बुद्धि १ सुख २ दुख ३ इछा ४ यत्न ५ ईर्षा ६ संख्या ७ प्रमाण ८ प्रथम ९ संयोग १० बिभाग ११ भावना १२ धर्म १३ अधर्म्म १४ प्रश्न ९ ॥ प्रमात्मा के क्या गुण हैं उत्तर ॥ बुद्धि १ इछा २ यत्न ३ संख्या ४ प्रमाण ५ विभाग ६ प्रथक ७ संयोग ८। प्रश्न ॥ १० ॥ सुखदुख भोक्ता कौन है। उत्तर। स्थूल सूक्ष्म शरीराभिमानी जीवात्मा। प्रश्न ॥ ११ ॥ परलोक

सत्य है की असत्य है ॥ उत्तर ॥ सत्य है ॥ प्रश्न ॥ १२ ॥ नामनामी मे भेद क्या है औ नामी क्या है ॥ उत्तर ॥ नामनामी मे एहअ भेद है राम नाम नामोत्तम है । अरु प्रश्न १३ । सर्वो परि कथन कर्म्म मो क्ष दा है । उत्तर ॥ कर्म्म यो कर्ता है प्रौ ही फल पाव ता है इसे कर्ता प्रधान है अरु कर्म्म का फलादप्र णवात्मक ईश्वर है इत्यादिन्याय मतानुकूल से प्रणवात्मक सर्वेश्वर सूचित होता है सो प्रण वात्मक राम चन्द्र है । तत्र प्रमाण ॥ अकाराक्षर संभूत सौमित्रे र्विश्व भावनः उकाराक्षर संभूत सत्रुन्घः तै साल्मकः प्राज्ञात्मकस्तु भरतो म काराक्षर संभवः अर्धमात्रात्मको राम ब्रह्मान न्दैक विग्रह । श्री राम सानिध्य वसाज्जगदाका रकारणी । उत्पत्ति स्थिति संहार कारिणी सर्व देहीनां सा सीता भवती ज्ञेया मूल प्रकृति संभवा

प्रणवत्वात्प्रकृतित्वं वदन्ती ब्रह्मवादिनां ॥
इत्यथर्वणवेदे रामतापिन्यां ॥ इस प्रमाणसे
न्याय शास्त्राधिकारियोंको भी रामोपासन हो
नाचाहिए इति संक्षेपतोन्याय शास्त्र सिद्धान्ता
ख्यानं समाप्तम् ॥ अथ सांख्य पातञ्जलि मतं
वक्ष्यामः ॥ सांख्य शास्त्र के कपिलदेव पातञ्ज
लिशास्त्र के पतञ्जलि आचार्य हैं। सांख्य पातञ्ज
लि के सिद्धान्त सभ एक हैं इस कार्य्य से दुनो एक
त्र लिखे गए। प्रश्न प्रथम ॥ मोक्ष क्या चीज है मो
क्ष की क्या यत्न है। उत्तर ॥ पुरुष प्रकृति का सम्मा
ध्यवस्थागत होना ॥ अरु ॥ चेतन को चैतन्य
होना मोक्ष है ॥ प्रथम ॥ चित्त निरोध कर्नो चाहि
ए ताके वैराग्य उत्पन्न होइ ॥ मोक्षाधिकारि द्वय
है उत्तम निकिष्ट ॥ निकिष्ट मोक्षाधिकारी को नि
याम ष्टाङ्ग योग कर्ना चाहिए। अरु। उत्तमाधिका

रीकों प्रयोजन क्रियाकी नहीहै। उस्को प्रथम वैराग्य
फेरि। अभ्यास होताहै सांख्य पातंजलि का सिद्धान्त
इहहै की। ज्ञानवस्था में भी प्रकृति कालै नहीहै ॥
पुरुष प्रकृति दुनो नित्यहै परन्तु। ज्ञान से प्रकृति
का अभाव हो जाताहै जैसे दोमनुष्य सैनवस्था
में संभाषण नही करि सकते है तैसे मुक्तिवस्थामें
प्रकृति अपने को समाधि मेंरहो अरु पुरुष अपने कों
प्रश्न। ३। प्रकृति पुरुष में क्या भेद है। उत्तर। प्रकृति
त्रैगुण्य युक्तहै अरु पुरुष केवल चैतन्य रूप है॥
प्रश्न। ४। मोक्ष की क्या युक्ति है। उत्तर। प्रथम यम
नेम प्राण। याम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि
क्रिया अष्टाङ्ग योग से वैराग्य। अरु॥ वैराग्य से अभ्या
स अभ्यास से सङ्ग त्याग करने से मोक्षावस्थां
को प्राप्त होता है प्रकृत्यालय अभ्यास से अरु उस्से
मोक्ष होता है अभ्यासात्प्रकृतिलयः इति सांख्यस

कः। प्रश्न। ५। जीवक्या है॥ उत्तर॥ जीवइश्वरसर्वव्यापक है सांख्यपातञ्जलिके सभसिद्धान्त मिलते है केवल एतना बिरोध है कि सांख्य वाले जीव कोस्वतब्रह्म मानते है पातञ्जलि नहीं। परन्तु। पातञ्जलिसूत्र में लिखा है की सांख्य में भी इश्वर को मानता है॥ परन्तु केवल मुमुक्षु के एश्वर्य इक्षा निबृत्यर्थ ऐसा लिखा है की जब भरि मुमुक्षु स्वतः इश्वर अपने के न माने गा तब भरि उस्को इक्षा ऐश्वर्य की रहेगी ऐश्वर्य्य परलोक बाधक है इसे मोक्ष नही होगा॥ प्रश्न। ६॥ सृष्टि कर्त्ता कौन है मायाक्या है। उत्तर। पुरुष प्रकृति का संयोग जगत कारण है अरु॥ माया का स्वरूप रज तम सत है संयोग कारण अविद्या है। प्रश्न। ७॥ जगत सत है की असत है॥ उत्तर॥ भ्रम मात्र जगत चैतन प्रकृति को भासता है॥ प्रश्न॥ सुखदुख किस्को होता है

उत्तर चित को ॥ प्रश्न ॥ ८ ॥ परलोक क्या है उत्तर ॥ किछु नही। परन्तु शुभा शुभ कर्म्म कर्त्ता अज्ञानी को स्वर्ग नर्क प्राप्ति होता है ॥ प्रश्न ॥ ९ ॥ नाम क्या है उत्तर ॥ अर्थ का वाचक है। प्रश्न ॥ १० ॥ सभ से श्रेष्ट कौन है ॥ उत्तर ॥ पुरुष ॥ इत्यादि सांख्य पातञ्जलि सिद्धान्तावालोकन से पुरुष सर्वोपरि सूचित होता है सो पुरुष रामचन्द्र है ॥ तत्र प्रमाण। नमो भगवते परम पुरुषाय श्री रामायेति श्रुतेः अब सांख्य पातञ्जलि मताधिकारियों को भी रामोपासक होना चाहिए इति सांख्य पातञ्जलि सिद्धान्ताख्यानं समाप्तम ॥ ॥ प्रश्न प्रथम ॥ मोक्ष क्या है मोक्ष प्राप्ति का क्या यत्न है ॥ उत्तर ॥ अपने स्वरूप को जानना स्व स्वरूप में मिलना मोक्ष है प्रथम कर्म्मोपासना से मन पवित्र होता है। पुनि वेदान्त शास्त्र के श्रवण मनन ध्यासन से-

ज्ञान होताहै तबस्वस्वरूपमें मिलताहै प्रश्न॥
जीवक्याहै।उत्तर।सच्चितानन्द निर्विकार व्या
पक है॥ तत्वमसि महावाक्य मे लिखाहै जिस्का
इय ह अर्थ है की तत शब्द काकी तू ही जीवहै चि
तचैतन्यहै आनन्द पना सरूप॥ जीवब्रह्म से कु
छु भेद नहीं है॥ जैसे जल औ बुन्द का संयोग है
बुन्दका समूह नदी औ एक बुन्द केवल बुन्द क
हावताहै॥ परन्तु॥ मधूरता शीतलता दोनो मेंहै
परन्तु बिषेष बिषेषण करिके बुन्द सागर से आया
अरु बुन्दका समूह फेरि सागर हो सकताहै ऐसे
ही जीवब्रह्म है चैतन्य है सुखदुख धर्म्मी धर्म्म
मायाकृत कारण मात्र जीवचैतन्य को नहीं है
सृष्टिकर्त्ता कौन है माया क्याहै॥ उत्तर॥ ईश्वर
व्यापक है जैसे सूर्य्य औ किरण एक बस्तु है तैसे
जीवईश्वर॥ उदाहरण एक स्त्री बाप के घर बेटी पति

के घर बहू कही जाती है परन्तु स्त्री एक है तैसे मा
याके दोष से ईश्वर जीव कहावता है। यथार्थ दो
नों एक हैं अरु माया को नित्य कहा जाइ तौ ज्ञानो
दय से माया का धर्म्म नास हो जाता है औ नित्य
कहैं तौ जब हैं नहीं तौ कहां से होती है इस कारण
से माया न सत है न असत उदाहरण सूर्य्योदय से
रात्रि का अभाव अरु सूर्य्यस्त में फिर रात्रि होती
है जो रात्रि है नहीं तौ कहां से होती है तैसे ब्रह्म दृष्टि से
माया का अभाव हो जाता है परन्तु माया ब्रह्म
की इच्छा औ तदाधीन है॥ प्रश्न॥ जक्त सत है की
असत अरु जक्त स्वप्न स्टष्टि में क्या भेद है॥ उ
त्तर॥ जक्त अहन्कारो भ्दव असत है जक्त स्वप्न स्ट
ष्टि में केवल अल्पकाल वौ दीर्घकाल का वाचा
मात्र भेद है वौ अग्यान कर के बुद्धि को भासता है
६ बस्तु जैसे ईश्वर १ जीव २ अविद्या ३ ब्रह्म ४

वौआ्युविध्याकाचैतन ५ वौसम्बोध वौअनादि
बस्तुका भेद ६ एह स्वरूपका अनादि है जा
ग्रत जक्त स्वप्नस्रष्ट मे बडा भेद नहीं है उदा
हरण जैसे स्वप्नवस्था मे असत्य वस्तु देखाई दे
ता है परन्तु जाग्रतवस्था मे वह असत अज्ञान
मात्र सूचित होता है तैसे अज्ञानवस्था मे सं
सार सतज्ञनवस्था मे असत है ॥ प्रस्न ॥ सुख
दुख किस्को होता है औ म्रत्यु के पश्चात जीव
कहां जाता है ॥ उत्तर ॥ सुख दुख अंतस्करणका
धर्म्म है परन्तु संगदोष से चैतन्य ने अपने मे
मान लिहा है ॥ कर्म्म के नुस्वार से सुख दुख हो
ता है अरु ॥ ज्ञानी का जीव कहीं गवन नहीं क
ती वासना उसकी नास मान है अरु अज्ञानी
का जीव आसावद्ध गवन कर्त्ता है ॥ उदाहरण
भोजन बनावने मे जो पदार्थ स्थाली मे रहता है

श्रोही गिरता है तैसे आसा आधार पात्र है कर्म्मा
नुसारिणी बुद्धि अन्त में कर्म्मानुकूल जीव कों
आसा अरु तदनुकूल जीव वासना मे गवनकर्ता
है मन चित अहन्कार बुद्धि कों अन्तस्करण क
हते हैं अरु अन्त मे सभ एक वस्तु है ज्ञान प्राप्ति से
वासना की नास हैं अरु वासना नही है तों जी
व गवन नही कर्त्ता स्वतः अपने स्थान मे स्वस्वरू
प वोधक करि कै ब्रह्म है प्रश्न॥ परलोक क्या है॥ उ
त्तर॥ परलोक स्तोति मात्र है असत जैसे स्वप्नाव
स्था मे संसार के व्यवहार सत्य परन्तु ज्ञानवस्था
मे असत तैसे अज्ञान करि कै स्वर्ग नर्कादि व्यवहा
र जीव को भासित होता है परन्तु ज्ञान से जीव
स्वत ब्रह्म है॥ स्वर्ग नर्क किस्को होइ इत्यादि वे
दान्तवाक्यों से सूचित होता है की इश्वर जीव मे
नदी बुन्द का भेद है जानना चाहिए बुन्द नदी के

आधीन है सो नदी रूपी ईश्वर राम चन्द्र बुन्द रूपी ब्र
ह्मादिक देवता इत्यादि सकल जीव तत्त्व प्रमाण
यतो इमानि भूतानि जायन्ते प्रलीयन्ते इति श्रु
तेः॥ इसंक्षेपतो वेदान्ताख्यानं समाप्तम्॥ इत्यादि
शास्त्रों में अनेक प्रकार से मोक्षोपाइ लिखी है प्र
सबका सिद्धान्त रामोपासना है परन्तु मुमुक्षु को
अनेक पंथ देखने से भ्रम होइगा की कौन पंथ य
थार्थ है जथार्थ ए सब मत है परन्तु जथाविधि पु
र्वक साधन कठिन है मैमांशा में कर्म प्रधान न्या
य में कर्ता वेदान्त में जीव ब्रह्म का अभेदान्वै इत्या
दि कठिन बस्तु का साधन जथार्थ कलि में नहीं
बन्ता अब देखना चाहिए की जेसका साधन भी ब
ने वो सर्वोपरि मत भी हो सो बेद वाक्यानुकूल
राम भक्ति है तत्त्व प्रमाण न स्याद्दन्य शिवः पंथाम
सितो विजीतात्म निवासु देवो भगवति भक्ति जे

त्रभविष्यती इतिभागवतेतथा सप्तकोटिमहा
मन्त्रश्चीतविभ्रमकारकाः एकएवपरमन्त्रोरा
मइत्याक्षरद्वयम मनुस्मतौऽहंविधातागरुड
ध्वजश्चरामस्यवालेक्षमुपासकानाम ।। गुणा
ननन्तान्कथित्तुन्नसक्ताः ।। सर्वेषुभूतेष्वपिपावना
स्तेइतिशिवाक्यंमहाभार्ये ।। कथाचसा धनंसिद्धि
भक्तिः श्रीमेथिलीपतेः अन्यंतुकेवलश्रमंसध्धितं
मतसाधितंमतवादिभिः ।। इतिअगस्त्यसंहितायां
सर्वैषांवेदसाराणांरहस्यन्तेप्रकाशितंः भक्तिः श्री
जानकीनाथव्रतमन्यंनतत्समम । पारासरस्मृ
तौ ।। पार्वत्युवाच ।। सर्वज्ञसर्वलोकेशसर्वदुखनि
षुदनः ।। सर्वेषांसुगमपन्थाकोमेवददयानिधे ।।
महादेवउवाच ।। स्रृणुष्वावहितादेवियदेतत्स्र
तिपद्यते ।। सर्वेश्वरः सर्वमयः सर्वभूतहितेरतः ।
मुमुक्षुनांहितार्थायसकारोभूनरस्वोत्तम ।। इत्यग

स्त्यसंहितायां ॥ एषनिष्कंटकः पन्थायत्र संप्र
ज्यते हरिः ॥ कुपंथतं विजानीयाद्गो विन्द र
हितागमं ॥ इतिमहाभार्थे ॥ सर्वगुह्यतमंभूयश्शृ
णुमेपरमंवचः ॥ इष्टोसिमेदृढमतिततोस्ततो व
क्ष्यामित्तेहितम् ॥ मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजी
मांनमस्कुरु मामेवैष्यसि सत्यंते प्रति जाने प्रि
योसिमे ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं
व्रज ॥ अहंत्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशु
च ॥ इतिभगवद्गितायाम् ॥ इश्वर वाक्यं ॥ मुग्धे
ष्ट एवमनुजोपि सहस्त्रमध्ये धर्मव्रतीभव
तिसर्वसमानशीलः तेष्वेव कोटिसु भवेद्धिष
ये विरक्तः सद्ज्ञानको भवति कोटि विरक्तमध्ये
ज्ञानीषु कोटिषुन्ट जीवनको पि मुक्तः कश्चि
त्सहस्त्रनर जीवनमुक्तमध्ये विज्ञानरूपविम
लोप्यथब्रह्मलीनः तेष्वेव कोटिषु सकृतखलु

रामभक्तः। इति शिवसंहितायाम॥ नातः पर
तरंवेद्यः रामात्त्रैलोक्यनायकात॥ एक एव परं
ब्रह्म रामो वेदेषु गीयते॥ इति श्रुत्वा विनिश्चित्य
श्रीरामचरितं मया निर्मथ्य सर्वशास्त्रेभ्यः सं
चितं पठितं स्मृतं स्थापितं हृदये नित्यं सर्वस्वं प्रा
णजीवनं॥ इति शुकसंहितायाम॥ सवै पुंसांप
रोधर्म्मो यतो भक्तिरधोक्षजे॥ अहैतुक्यप्रतिहता
ययात्मा संप्रसीदती॥ अकामः सर्वकामोवा मोक्ष
काम उदारधी। तीव्रेण भक्तियोगेन भजेत पुरुष
परम॥ परिनिष्टितोस्मिनैर्गुण्यः उत्तमश्लोक
लीलया ग्रिहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीत
वान् श्रीमद्भागवते अतः पुंभिर्द्विजश्रेष्ठ वर्णा
श्रमविभागशः स्वनुष्टितस्य धर्म्मस्य संसिद्धि
र्हरितोषणं॥ तस्मादेकेन सा भागवान्सात्वतांप
ति॥ श्रोतव्यः कीर्त्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च सर्वे

दा ॥ इति भागवते ॥ प्रथमस्कंधे ॥ ये राम भक्ति
ममतां सुविहाय रम्याज्ज्ञाने रता प्रति दिनं परि
क्लिष्टमार्गेष्वारान्महेन्द्र सुरभिं परिहृत्य मूर्खा
श्वर्कं भजन्ति सुभगे सुखदुग्धहेतुः ॥ इति शि
वसंहितायां इत्यादि वाक्यों से राम भक्ति इत्या
दि पूर्वोक्त प्रमाणों से राम भक्ति सर्वोपरि सुलभ
मोक्षदा पंथ है राम भक्ती में दास सखा वात सल्य
स्त्रिंगार इत्यादि अनेक भाव है वो मोक्ष सब से
होत है तत्र प्रमाण राम रूपस्य ते जोयं जीवो वेद
प्रमाषित मभेदोमतस्य सर्वेषामचार्याणां वदा
मि तो दासवज्जे भिजानंति दासास्तेषामितिस्मृ
ता ये जानंति सखा तुल्यं सखवज्ज्ञानथो घतः ये
पश्यंति सखी भावं सखित्वं प्राप्नुवंति ते ब्रह्मात्म
कं च तज्जीवं तेषां ब्रह्म इति स्मृतः इति महारा
मायणे अरु भक्तिं अनेक प्रकार से लिखा है परन्तु

नौधाभक्ति बहुत मुख्य है वो भक्तन को जो मोक्ष सर्वोपर पदार्थ है उसकी भि इच्छा नही रहति तत्र प्रमाण न नाकपृष्टं नच सार्वभौमं नपारमेष्ठ्यं नरसाधिपत्यं नयोगसिद्धीर पुनर्भवंवा वाञ्छन्ति यत्पादरजः प्रपन्नाः ॥ और अन्यमतवाले यो मोक्ष के वास्ते अतिसय श्रम करते हैं सो तिस पर भी नही पाते और राम भक्तन को बिना परिश्रम मलब्ध है तत्र प्रमाण येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुधयः आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधो नादृतयुष्मदंघ्रयः तथा न ते माधव तावकाः क्वचिद्भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदा त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया विनायकानीकप मूर्धसुप्रभो और जब मनुष्य माया से छूटैगा तव मोक्ष होगी सो सेवाइ

भगवद्भक्त के सर्व माया के हैं तत्र प्रमाणं दै
वी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया मामेव
ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते और भक्तन
को वश्य स्वयं ईश्वर हैं और उनसे श्रेष्ठ कवन
हो सक्ता है तत्र प्रमाणं नवम भागवते भगव
द्वाक्यं अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज सा
धुभिर्ग्रस्त हृदयो भक्तैर्भक्त जनप्रियः नाहमा
त्मानमाशासे मद्भक्तैः साधुभिर्विना श्रियं
चात्यंतिकीं ब्रह्मन्येषां गतिरहं परा ये दारागार
पुत्राप्तान प्राणान्वित्तमिमं परं हित्वा मां शर
णं याताः कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे मयि निर्बद्ध हृ
दयाः साधवः समदर्शनाः वशे कुर्वंति मां भ
क्त्या सत्स्त्रियः सत्पतिं यथा मत्सेवया प्रतीतं
च सालोक्यादि चतुष्टयं नेच्छन्ति सेवया पू
र्णाः कुतोऽन्यत्कालविद्रुतं साधवो हृदयं मह्यं

साधूनां हृदयं त्वहं मदन्यते न जानंति नाहं
तेभ्यो मनागपि तथा च श्रीमद्भगवद्गीतायां
भगवद्वाक्यं अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो
गतव्यथः सर्वारंभपरित्यागी यो मद्भक्तः स
मे प्रियः यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कां
क्षति शुभाशुभपरित्यगी भक्तिमान्यः स मे प्रियः
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः शीतो
ष्ण सुख दुःखेषु समः संगविवर्जितः तुल्य निं
दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केन चित् अनिकेतः
स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ये तु धर्म्यामृ
तमिदं यथोक्तं पर्युपासते श्रद्दधाना मत्परमा
भक्तास्तेतीव मे प्रियाः इत्यादि पूर्वोक्त प्रमाणों
ते राम भक्त सर्वोत्तम हैं ॥ अरु राम भक्ति तीनि प्रका
र की है उत्तम मद्दिम निकिष्ट। प्रकृतिन्यौं करि यथा
र्थ सिद्धान्त यह है की दिवान्हु भगवन्मय है प्रथम

भक्तानुगामी को गुरुऐसकासं ते दीक्षा चाहिये
फेरि भगवत्कथाश्रवण कीजनतथा भगवद
र्चन इत्यादि अनेक प्रकारों से मन को तन्मय
करना चाहिये इसको कर्मलक्षण भक्ति क
हते हैं इसके अभ्यासते प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्ति
होती है प्रेमलक्षण भक्तिका लक्षण एह है की
प्रेमसे तन्मय होइ जाय तत्र प्रमाण एवं व्रत स्व
प्रियनाम कीर्त्या पातानुरागो द्रुतचित्त उच्चैः हं
सत्यथो रोदति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति
लोकवाह्यः अरु भक्तन को ध्यानमार्ग करिकै
भगवद्रूप मनन करिके भगवत्पदाम्बुज में स्व
मन भृंग करना चाहिये सो ध्यान की युक्ति एइ
है कि एकाग्र मन करि के भगवद्रूप में मन लगा
वै वो जो जो अंग धारणा में ध्यानमार्ग सो देखा
ने लगे तौ अन्य दंग में धारणा करै अथातो ध्यान

श्लोकानितस्यमण्डपेपरंदिव्यंरत्नमण्डपमुत्तम
मतन्मध्येवेदिकारम्यास्वर्णरत्नविनिर्मितीता
न्मध्येपरमंदिव्यंरत्नसिंहासनंशुभंसहस्रारम
हापद्मकर्णिकारैःसमुत्तमंतन्मध्येमुद्रिका
भिन्नंमुद्राद्वाभ्यांविभिन्नकंवन्हीन्दुमण्डले
नापिवेष्टितंबिन्दुभूषितम्-चंद्रकोटिप्रतीका
शंछत्राकंसचामरमसदामृदुघनश्लाविमुक्ता
दामवितानकमतन्मध्येजानकीदेवीसर्वशक्ति
नमस्कृतातत्रास्तेभगवानरामःसर्वदेवशिरो
मणिःतत्रादौचिन्तयेत्तेजोवन्हिरूपंसुशक्ति
कम्तेजसामहताश्लिष्टमानन्दैकाश्रमनिं
रमेकाग्रमनापश्येतत्रदेवसुविग्रहंस्निग्ध
मिन्दीवरश्यामंकोटीन्दुललितद्युतिमचिद्रू
पंपरमोदारंवीरभद्रवृहद्दमद्विभुजंमधुरंशा
न्तंजानकीप्रेमविह्वलामदोर्दण्डचण्डकोदण्ड

रामचन्द्रंमहाभजंमसीतालंकृतवामाङ्का
मरूपंरमोत्सुकंतरूणरूणसंकाशंविकचा
म्बुजपद्मकंपदपुन्वनस्वेचंदंबिपन्तेज
समावृतंकूर्मपृष्टभासंरणन्मंजीरपादकम
कटिसत्राङ्कितंश्रीसंजन्नसत्रैरलंकृतमर
त्नकंकणकेयूरशोभिताग्रभजद्वयमचन्द्र
कोटिप्रतीकशंकुण्डलाढ्यश्रुतिद्वयमप्र
वृताहूणसंकाशंकिरिटेनविराजितमगोवि
न्दंगोविन्देश्रेष्टंच्चिन्मयानन्दविग्रहमदिव्या
युधसंपन्नंदिव्याभरणभूषितमक्षरं
केवलंब्रह्मपीतकौशेयवाससमशंखचक्र
गदापद्मचर्मासिहलमूशलैःतद्रूपैर्वि वि
धाकारैःसेव्यमानंपरात्परमवशिष्टवामदे
वादिमुनिभिःपरिसेवितमलक्ष्मणःपश्चिमे
भागेधृतछत्रचचामरमउभौभरतशत्रुघ्नौता

त्कं रामं जो प्रमेव्यम्रमहन्मंतं वाचयन्त स्पुस्तकं भानुकोटि प्रतीकाश्रं चंद्रकोटिप्र मोदकं इन्द्रकोटि समामोदं वस्तुकोटि वस्तु प्रदं विष्णुमतीपालनं ब्रह्मकोटिविसर्जनं रुद्र कोटिविमर्दम्वै मातृकोटि विनाशनं भैरवको टिसंहारं मृत्युकोटि विभक्षकं यमकोटिदु राधर्षं कालकोटि प्रधावकम् इति सत्यदाशि वसंहितायां सौमित्रि वाक्यं वेदान्यति अरु रा मभक्त जो ति नि प्रकार के हैं सो नी किष्टकाय ह कर्म है कि श्रवान्ह राघौ के अर्चनादिक त थाक थाउत्स वादिक मेतत्पर रहें वो भगवत्कथा भगवद्भक्तों के विषे प्रदेह करते करते तव म ध्यम यस्का लक्षण नौ धाभक्त है उस्के अ भ्यास सेत ब उत्तमभक्ति जेस्का लक्षण ह है कि तन्म यहो जाइ रा घौ के अंग जो है उस्में

रात्रिदिन मन लगा रहै उस्को छोड़ि के अन्य
मन न जाइ सत्रु मित्र सीत उस्न निंदा स्तुति जो
माया कृत उपद्रौ है उस्का त्याग होकर देह
दसा न रहै वो किसी बस्तु की इक्षा न रहै तब उ
त्तम भक्ति है तत्र प्रमाण भागवत उ० वि क्र मां
छिशाखा न रख मणि चंद्रिका निरस्त ता पे ह दि
कथमुपसीदतां पुनः सप्र भवति चन्द्र इवो दि
तेऽर्कतापः एस्से परे कोई नहीं है साक्षात ई
श्वर मय है एस्को तुरियावस्था कहते हैं वो ए
लोग नी स्त्रैगुण हैं अरु कोइ रुद्रादिक जो पर
भ्यद है उस्का भि भक्तों को तिरस्कार है केव
ल भगवद्पदाम्बुज दर्सन क्षा है अरु मन जो है
वहि मुख्य प्राणी है उसि को एकत्र करना कठि
न है सो मुमोक्षु को चाहिये की मन एकत्र करै
अरु मन का स्वभाव चंचल है तस्का एकत्रता

कठिन है परन्तु मुमोक्ष को उचित है कि मन का
स्वभाव भि रहै परन्तु भक्ति में जैसे भगवद्गु
णगुण सौसिल्यता इत्यादि मे मन लगा रहे
अन्यत्र न जाइ देखना चाहिये की मनुष्य जो
चैतन्य जीव है उस्को सुगम पंथ धरना चा
हिये राघो के तुल्य कौन असा दयालु है देखो
गणिका गीध इत्यादि महा पापियों को गति
दिया अन्य देव सब स्वार्थ बस हैं गी धपुतना
सेवरी नी खाद केवल सकृत सर्ण गत मात्र से
मुक्त हो ये सिद्धान्त एह है कि धर्म पुन्य ज्ञान क
र्म जज्ञ इत्यादि जो चाहे सो करै परन्तु गति बिना
राम भक्ति नही है काहे कि बिना राम जज्ञादिक
जेतने कर्म है सब जाल है जैसे अ्रकास पुष्प ए
क राम भक्ति में रस है अन्य केवल वाक्य मात्र है
तत्र प्रमाण न तत्पुराणो नहियत्र रामो यस्या न रामो

[illegible]भ्य तिलकं विवरेषु दीप्तिरामांघ्रिविंदुसहितं सच पि
[illegible]महे कंठे तथा तुलसिदाम लसद्भुजे वै तप्तेन बाण धनुषां
कित राम भक्तः रामस्य चैव हृदये शुचिराजमंत्रं श्री रामना
म संहितं निजनाम युक्तं सत्संगनित्यनिरताश्रुतितत्ववेत्ता।
जातो महान रघुपते समुपासकस्सः इति श्रीमन्महारामाय
णे तत्त्वश्चादिस्के अभ्यास से प्रेमलक्षणा भक्ति ज्ञान होता है
तब देहकी दशा नहीं रहती भगवन्मय होय जाता है अरु सदृस
दका ज्ञान नहीं रहता चराचर में भगवद्रूप देखता है अरु संसार से
वाह्य होकर जब भगवद्रूप देखता है तब हर्ष से जब विच्छेद होता है
तब रुदन करता है तत्र प्रमाण खं वायुमग्निं सलिलं मही च ज्योतीं
षि सत्वानि दिशो द्रुमादीन सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरं यत्किंच भूत
प्रणमेदनन्यः क्वचिद्रुदं त्यच्युतचिंतया क्वचिद्धसंति नंदंति वदंत्य
लौकिकाः नृत्यंति गायं त्यनुशीलयंत्यजं भवंति तूष्णीं परमेत्य निर्वृ
ताः इति एकादश भागवते वाल्मीत रामायणे योगिराज कन्ये त्वतो व
दामि रघुनाथ जनस्य मुख्यमन्यं विहाय शकलं सदसच्च कार्यं श्री रा
म पंकज पदं सततं स्मरन्ति श्री राम नाम रसनाग्र पठंति भक्त्या प्रेम्णा च रा
मगिरो प्यथ हृष्टलोमाः सीतासुतं रघुपतिं च किशोरमूर्तिं पश्यंत्य हर्निशि
मुदा परमेन रम्यं भूमौ जले नभसि देव नरासुरेषु भूतेषु देवि शकलेषु चरा
चरेषु पश्यन्ति शुद्ध मनसा खलु रामरूपं रामस्य ते भुवितले समुपासकाश्च
ये कल्पकोटि सततं जप होम योग ध्यानैः समाधि[illegible]तो रतब्रह्मज्ञाना तते
ऽपि धन्य मनुजा हरि वाक्य शुद्धः भक्तिस्तदा भवति तस्य च राम पादौ
इति श्रीमन्महारामायणे इति संक्षेपतो भक्ति व्याख्यानं समाप्तं ॥ ०॥

कठिन है परन्तु मुमोक्षु को उचित है कि मन का
स्वभाव भिर है परन्तु भक्ति में जैसे भगवद्
पगुण सो सिल्य ता इत्यादि में मन लगावै है
अन्यत्र न जाइ देखना चाहिये की मनुष्य जो
चैतन्य जीव है उस्को सुगम पंथ धरना चा
हिये राघौ के तुल्य कौन अैसा दयालु है देखो
गणिका गीध इत्यादि महा पापियों को गति
दिया अन्य देव सब स्वार्थ बस है गीध पुतना
सेवरी नीखाद केवल भक्त सरणागत मात्र से
मुक्त होये सिद्धान्त एह है कि धर्म पुन्य ज्ञान क
र्म जज्ञ इत्यादि जो चाहे सो करै परन्तु गति बिना
राम भक्ति नही है काहे कि विना राम जज्ञादिक
जेतने कर्म है सब जाल है जैसे अकास पुष्प ए
क राम भक्ति में रस है अन्य केवल वाक्य मात्र है
तत्र प्रमाण नतच्युराणा नहियत्र रामोयस्यानरामो

चरभ्यतिलकंविवरेष्वादीप्तंरामांघ्रिविंदुसहितंसचपि
तमद्धेकंठेतथातुलसिदामलसद्भुजेवैतप्तेनवाणधनुषं
कितरामभक्तःरामस्यचैवहृदयेश्रुचिराजमंत्रंश्रीरामना
मसंहितंनिजनामयुक्तंसत्संगनित्यनिरताश्रुतितत्ववेत्ता
जातोमहानरघुपतेसमुपासकस्सःइतिश्रीमन्महारामाय
णेतप्तश्चादिस्केअभ्यासमेंप्रेमलक्षणाभक्तिज्ञानहोताहै
तवदेहकीदशानहीरहतीभगवन्मयहोयजाताहैअरुसद्दस
दकाज्ञाननहींरहताचराचरमेंभगवद्रूपदेखताहैअरुसंसारसें
वाह्यहोकरजवभगवद्रूपदेखताहैतवहर्षवोजवविच्छेदहोताहै
तवरूदनकरताहैतन्नप्रमाणंखंवायुमग्निसलिलंमहींचज्योतीं
षिसत्वानिदिशोद्रुमादीनसरित्समुद्रांश्चहरेःशरीरंयत्किंचभूत
प्रणमेदनन्यःक्वचिद्रुदंत्यच्युतचिंतयाक्वचिद्धसंतिनंदंतिवदंत्य
लौकिकाःनृत्यंतिगायंत्यनुशीलयंत्यजंभवंतितूष्णींपरमेत्यनिर्वृ
ताःइतिएकादशभागवतेवाल्मीकीरामायणेअथोगिरिराजकन्येत्वतोव
दामिरघुनाथजनस्यमुख्यमन्यंविहायशकलंसदसच्चकार्यंश्रीरा
मपंकजपदंसततंस्मरन्तिश्रीरामनामरसनाप्रपठंतिभक्त्याप्रेम्णाचग
द्गदगिरोप्यथहृष्टलोमाःसीतायुतंरघुपतिंचकिशोरमूर्तिंपश्यंत्यहर्निशि
मुदापरमेनरम्यंभूमौजलेनभसिदेवनरासुरेषुभूतेषुदेविशकलेषुचरा
चरेषुपश्यन्तिशुद्धमनसाखलुरामरूपंरामस्यतेभुवितलेसमुपासकाश्च
यकल्पकोटिसततंजपहोमजोगैर्ध्यानैःसमाधिभिरतोरतब्रह्मज्ञानात्तते
देविधन्यमनुजाहरिवाह्यशूद्राःभक्तिस्तदाभवतितस्यचरामपादे
इतिश्रीमन्महारामायणेइतिसंक्षेपतोभक्तिव्याख्यानंसमाप्तं॥ ॥

अथ चुतुर्थ भाग लीख्यते इस भाग मे अनेक बस्तु का सिद्धांत लिखा जाएगा प्रथम एह कि धर्मसास्त्र में अनेक पापों का दंड लिखा है वो बहुत ग्रंथन में उस्का अस्थान है सो एक त्र लिखता हों जदिस स्वानुकूल पाप बहुत है परन्तु मुख्य पाप एह है नर्क अति दूस्तर दुखदाइ है कोई एकइस कोइ अठाइस कुण्ड नर्क कहते हैं तेन के नाम एह हैं तामिस्र १ अंधतामिस्र २ रौरव ३ महारौरव ४ कुंभी ५ कालसूत्र ६ असिपत्रवन ७ शूकरमुख ८ अंधकूप ९ कृमभोजन १० अहसंदंश ११ तप्त १२ सूरभीषण १३ वज्रकंटक १४ शाल्मलि १५ वैपतरनी १६ प्राणरोध १७ सार्पादन १८ अवीचिन १९ अपपान २० कर्दम २१ रक्षगणभोजन २२ स्र्लप्रोत २३ दंदसूकुंभ २४ अवटेनिरोधन २५ पर्यावर्तन २६ सूचिमुख ७ वैरणी सो जो मनुष्य

परधन परस्त्रुत दारा हरण करता है सो कालपा
ससे बांधकर तामिस्रनर्क मे डारा जाता है और
जो ठगी करता है सो अंधतामिस्रनर्क मे जा
ता है और अंधा हो कर लोहदण्ड से मारा जा
ता है वो उल्टा एक कल्पत फलटकता रहता है
जो मनुष्य अहंकार से ईश्वर को नाहीं मानते
सो रौरवनर्क तप्तकुण्ड मे जमदूत नित्य जला
ते है वा जो जीवहिंसक हैं से कुंभीनर्क में प्राप्ति
होते है और जेन जीवन को मारते हैं वो ईलोह
क्रम होकर त्वचा मे घुसकर नेत्रादि मार्ग से नि
कलते हैं और जो शरीर पोषण करते हैं सो रौरव
नर्क में पीव मूत्रादि विष्टा खाने पाते हैं जो मा
न्स भोजन करते हैं सो महारौरवनर्क में डाले
जाते हैं वो रुरु नामी क्रम उनको भक्षन करि
के उगिलके पुनः पुनः भक्षण करते हैं अरु माता

पितागुरु द्रोही अथवा निन्दक कालसूत्रनर्क मे ताम्रमयभूमि पर अंगार में लोटाए जाते हैं अरु जो उदर निमित्तक पाखंड करते हैं सो असिपत्रवननर्क में ताजन से मारे जाते हैं अरु राजा होकर अघी को अदण्ड अरु अनघ को दण्ड अरु सबी सो द्रव्य लेने से शूकरमुखनर्क मे जाकर शूकरमुख होकर अनेक शूकरों से मारे जाते हैं अरु जो नर खटकी रामसक इत्यादि जीवों को मारते हैं सो अंधकूपनर्क में डार कर आही कीडे आन हिंसको को स्वव ज्रदृष्ट से चोथते हैं अरु जो चोरकर्म करते हैं सो संदंसनर्क में जाइकर आन का हाथ काटकर तप्तगोलन से दहजारते हैं अरु जो परदारा अथवा वेश्यारत होते हैं सो तप्तनर्क में लोहमय स्त्री तप्तकर कै जमदूत पुरुष मे वोई सी तरह पुरुष

इस्त्री मैंछ पटा करदाण्डा है करते हैं कल्प भ
रितक अरु जो इश्वर को छोड अन्य देवो पाश
नावानवीन मतारूढ होताहैसो साल्मलीन
र्क मे एक कल्प तक खररूपरहते हैं अरु जो भ
गवद्बेदशास्त्रादिनिन्दक है सो वैतरणी मे प्राप्ति
होते है अरु जिह्वा काट लिइ जाती है अरु ब्रा
ह्मण क्षत्री अजा स्वान गर्दभ जो पालते हैं सो
वैरणीनर्क में मलमूत्र भोजन पाकर स्वानख
र जोनि मे प्राप्ति होते है अरु जो अहेर खेलते हैं
अथवा सीक्षा देते हैं वा प्रसंसा करते हैं सो वैसा
सनन र्क में लटकाइ करि जमदूत सहस्त्र ब
र्षपर्जन्त बाणन से मारते हैं जो ग्राम जलाते
हैं अथवा घूस वा किसी तरह से व्यर्थ परद्रब्य
लेते हैं सो नर्कसार में जाते हैं वो सप्तसतकु
तालोहद्रुइ स सहस्त्र बर्ष तक बांधते हैं अरु जो

झूठी गवाही अथवा झूठी पत्र बनाते हैं सो अ-
वीची नर्क मे २८ जोजन उतंग पर्वत से सहस्र
बर्ष तक फिरि फिरि गिराए जाते हैं अरु जो मद
पान करते हैं अथवा बेचते हैं सो लोह पान नर्क
में लोह पुनि पुनि शाहस्र बर्ष तक प्रिआए जाते
हैं अरु पापी मनुष्यों की प्रशंसा वा संग करते हैं
अथवा अभिमानवस भक्तों का आदर नहीं क
रते सो बज्र में जाते हैं वो उनका त्वचा नि का
ल लवण भर देते हैं अरु जो भवानी भैरवादि को
बलि देते हैं सो राक्षस भोजन नर्क में जाकर जे
न को बलि देते हैं वोइ जीव आन को भक्षण क
रते हैं अरु जो रिणि नहीं देते वा असत्य चुगली
वा क्रूर स्वभाव करते हैं सो असि पत्र वन नर्क में
सहस्र बर्ष तक रहते हैं अरु जो ब्रह्म वृति हरण
अथवा ब्रह्म द्रोह करते हैं सो साठि शहस्र बर्ष त

कक्रम कुंड नर्क में रहते हैं अरु जो मनुष्य हो भगवद्भक्ति अथवा स्ववर्णाश्रम धर्म नहीं करते सो सूचीमुख नर्क में दश सहस्र बर्ष तक रहते हैं इत्यादि श्रीमद्भागवत पंचमस्कंद तथा जाज्ञवल्क संहिता मे प्रायश्चित लिखा है सो इहां मुख्य पापों का दण्ड लिख दिया गया अरु जो अन्य प्रायश्चित है उनका आख्यान पूर्वोक्त ग्रंथों में लिखा है इति प्रायश्चित दण्डाख्यानं समाप्तं ॥ अथ वर्णाश्रमाख्यानं लिख्यते बेद शास्त्रों में चारि आश्रम तथा चारि वर्ण लिखे हैं मनुष्यों को स्ववर्णाश्रम धर्म पर आरूढ होना ईश्वराज्ञा है अन्यत करने से हानि होति है तत्र प्रमाण श्रीमद्भगवद्गीतायां स्वधर्मो निधनश्रेयः परधर्मोभयावह सो चारि वर्ण है ब्रह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र संक्षेप घर्म कहे जाते है प्रथम ब्रह्मण को चाहिए कि अष्ट

बर्ष के अवस्था में बैदिक यज्ञोपवीत करै और
सुचि रहै वो त्रिकाल संध्या बैदिक करै वो नित्य
हवन वो श्रीरामचन्द्रार्चन वो ज्ञान बैराग्य तप
वेद पढ़ना वो पढ़ावना दान पति ग्रह यज्ञ करना
कराना उचित परस्त्री हिंसा असत्य भाषण अ
न्य देवार्चन अशुचि इत्यादि त्याग उचित है
तत्र प्रमाणानि शमोदमस्तपः शौचं क्षांतिरार्ज
वमेव च ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभा
वजं इति श्रीमन्भगवद्गीतायां शमोदमस्तपः
शौचं संतोषः क्षांतिरार्जवं मद्भक्तिश्च दया सत्यं
ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमाः इति एकादशे भगवद्वाक्यं
अवैष्णवत्वं विप्राणां महापातक संमितं अवै
ष्णवस्तु यो विप्रः सर्वकर्मसु गर्हितः चतुर्वेदी
च यो विप्रो वासुदेवं न विंदति बेद भार समाक्रां
तास वै ब्राह्मणगर्धवः न त्रिपुंड्रं द्विजो धार्यं न

पद्माकार में वचन-चान्यदेवताभक्तिःपापध
पिकवाचन इति वशिष्ठस्मृतौ ब्राह्मणानांस्व
धर्मश्चत्रिसंध्यं भजनं हरेः तत्पादोदकनै
वेद्यं भक्षणं चसुधाधिकं संध्याहीनोऽशु
चिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु यदन्यत्कुरुतेक
र्मनतस्य फलभाग भवेत इति ब्रह्मवैवर्तेह
रीति से अनेक ग्रन्थों में लिखा है परन्तु ब्राह्मण
को केवल श्रीराम-चन्द्र उपासना करना चा
हिए पूर्वोक्त प्रमाणों से अथवा तो क्षात्र धर्म नि
क्षत्री ब्राह्मणों का एक ही धर्म है क्षत्रियों को
दान लेना वेद पढाना जज्ञ कराना त्याग है आ
गे श्लोक लिखे जाते है शौर्यं तेजो धृति दा
क्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् दानमीश्वरभाव
श्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् इति भगवद्गी
तायां तेओ यत्नं धृतिः शौर्य तितिक्षौदार्यमु

घमः स्थैर्यं ब्रह्मण्यतैश्वर्यं क्षत्र प्रकृतयस्त्वि
माः अहिंसा सत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभ
ताभूतप्रियहितेहा च धर्मोयं सार्ववर्णिकः
इति श्रीमद्भागवते एकादशे और क्षत्री को
हिंसा अशौर्यता माद्य पान असत्य भाषण इ
त्यादि त्याग है अरु रामचन्द्राचेण तस्मो ति हे
तु दान यज्ञ ब्राह्मण सुश्रूषण इत्यादि उचित
है अथातो वैश्य धर्माणि वैश्य को कृषी कर्म
गोरक्षण वाणिज्य अहिंसा ब्राह्मण सेवा पु
राणादि स्रवण उचित अरु वेद पाठ जज्ञ ब्रह्म
ज्ञान कर्मे त्यादि त्याग है कृषिगोरक्ष्य वाणि
ज्यं वैश्य कर्म स्वभावजम इति श्रीमद्भगव
द्गीतायां आस्तिक्यं दाननिष्ठा च अदंभो ब्रह्म
सेवनं अतुष्टिरर्थोपिचयैर्वैश्यो प्रकृतयस्त्वि
माः इति भागवत एकादशे अथातो शूद्र धर्माणि

अशुचिरनृतकामक्रोधपरिचर्यादित्यादि
शूद्र धर्म है परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापिस्व
भावजं इति श्री भगवद्गीतायां अशौचमनृतं
स्तेयं नास्तिक्यं शुष्कविग्रहः कामक्रोधस्तर्ष
श्चस्वभावोऽतेऽवसायिनां इति एकादश भग
वते इति वर्ण धर्माणि ॥ अथातो आश्रम धर्मा
णि वेद शास्त्रो मे चारि आश्रम है ब्रह्मचर्य गृह
स्थ वाणप्रस्थ सन्यस्त सो प्रथमाश्रम ब्रह्मचर्य
है ब्रह्मचर्य में पहिले उपनयन में जब ब्रह्मचर्या
श्रम का इरादा होय तौ आचार्य के इहां जाइक
र षडंग वेद इत्यादि द्वादश वर्ष तक पढै और शुचि
ऊर्द्धरेता रहै त्रिसंध्योपासन करै अहिंसक स्त्री
संगत्याग इत्यादि धर्म वेदोक्त उचित है तत्र
श्लोकानि द्वितीयं प्राप्यानुपूर्व्यात् जन्मोपन
यनं द्विजः वसन गुरुकुले दांतो ब्रह्माऽधीयीत

चाहुतः मेखलाजिनंदंडाक्षब्रह्मसूत्रकमं
डलून्जटिलोऽधौतदद्वासोऽरक्तपीठः
कुशान्दधत्स्नानभोजनहोमेषुजपोच्चारे
चवाग्यतः नछिंद्यान्नखरोमाणिकक्षोपस्थ
गतान्यपिरेतोनावकिरेज्जातुब्रह्मव्रतधरः
स्वयंअवकीर्णेऽवगाह्याप्सुयतासुस्त्रिपदीं
जपेत्अग्न्यर्काचार्यगोविप्रगुरुवृद्धसुरां
शुचिः समाहितउपासीतसंध्येचयतवा
ग्जपन्आचार्यमांविजानीयान्नाऽवमन्ये
तकर्हिचितनमर्त्यबुद्ध्याऽसूयेतसर्वदेव
मयोगुरुः शुश्रूषमाणआचार्यसदोपासीत
नीचवद्यानशय्यासनस्थानैर्नातिदूरेकृतां
जलिः एवंवृत्तोगुरुकुलेवसेद्भोगविवर्जितः
अग्नौगुरावात्मनिचसर्वभूतेषुमांपरंअपृथ
ग्धीरुपासीतब्रह्मवर्चस्व्यऽकल्मषः स्त्रीणां

निरीक्षणस्पर्शसंलापक्ष्वेलनादिकंमाणि
नोमिथुनीभूतानगृहस्थोग्रतस्त्यजेतइति
श्रीमद्भगवतेइसरीतीसेअन्यत
धर्मऔरभीहैसोब्रह्मचर्यविधिग्रन्थान्त
रोंसेदेखनाचाहिएमुख्यइहहैइतिसूक्ष्मतो
ब्रह्मचार्याख्यानंअथातोगृहस्थाश्रमाख्या
नं॥ गृहस्थाश्रममेंविवाहशुचिकरकैस्वव
र्णधर्मानुसारचलैअरु ब्राह्मणसाधुकातो
षणकरैअरुभगवदर्चनअगस्त्यसंहितोक्त
करनाउचितहैक्योंकेभगवद्वाक्यअगस्तेनो
क्तमार्गेणपूजयेन्मांसमाहितःइत्यादिश्लोका
निगृहार्थीसदृशींभार्यामुदहेदयुगुप्सितांय
वीयसींतुवयसायांसवर्णामनुक्रमातइज्या
ध्ययनदानानिसर्वेषांचद्विजन्मनांप्रतिग्र
होध्यापनंचब्राह्मणस्यैवयाजनंप्रतिग्रहं

मन्यमानस्तयस्तोजोयशोनुहं अन्याभ्यामेव
जीवेत शिलैर्वा दोषदृक्तयोः ब्राह्मणस्य हि देहो
यं क्षुद्रकामायनेष्यते कृच्छ्राय तपसे चेह प्रेत्या
ऽनंतसुखाय च शिलोंछवृत्त्या परितुष्टचित्तो
धर्ममहांतं विरजं जुषाणः मय्यर्पितात्मा गृह
एव तिष्ठन्नाऽतिप्रसक्तः समुपैति शांतिं वेदा
ध्यायस्वधास्वाहाबल्यन्नाद्यैर्यथोदयं देव
र्षिपितृभूतानि मद्रूपाण्यन्वहं यजेत यदृच्छ
योपपन्नेन शुक्लेनोपार्जितेन वा धनेनापीड
यन्भृत्यान्न्यायेनैवाहरेत्क्रतून कुटुंबेषु न स
ज्जेत न प्रमाद्येत्कुटुंब्यपि विपश्चिन्नश्वरं प
श्येद्दृष्टमपि दृष्टवत् एवं गृहाशयाक्षिप्तहृद
यो मूढधीरयं अनृप्तस्ताननुध्यायन्मृतोंधं
विशते तमः इत्यादि पूर्वोक्तप्रमाणेन गृहस्था
श्रममें नित्यक्रिया भगवत्पूजन नित्यहवन

नित्यदानब्राह्मण भगवद्भक्ता द्वितीयणाक
रना विषयसे असक्त हिंसा परस्त्री असत्य इत्या
दि त्याग लिखा है और पूजन अगस्त्य संहितो
क्त लिखा जाता है प्रथम प्रति मा आठ प्रकार की
होती है शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च
सैतकी मनोमयी मृण्मयी प्रतिमाष्ट विधा
स्मृता॥ शिलाकी १ काष्ठकी २ लोहेकी ३ चन्दन ४
चित्र पुस्तक प ए क सुवर्ण ६ मनोमय ७ म
त्तिका ८ अगस्तिरुवाच पूजाविधानं वक्ष्या
मि नारदाभिमुखं च यत्वात्मीकाय मुनीन्द्र
यद्द्वार पूजादिकं तथा वेदं गणपतिं भानुं तिल
कं श्रामिनं शिवं क्षेत्रपालं तथा प्राची विधात
रमनंतरं भंसा हाधीशं गृहं गंगा यमुना कुलदे
वता प्रचंड चंडौ च तथा शेखयद्म निधी अपि
वास्तो ष्पति द्वारलक्ष्मी गुरु वागाधि देवता एता

संपूज्य भक्त्या हं श्रीराम द्वार देवता महा मंडू
क कालाग्निरुद्राभ्यां प्रणमाम्यं हं आधार श
क्ति कूर्म भानागाधिपतये तथा पृथिव्यै च त
था क्षीरसागराय नमो नमः श्वेतद्वीपाय रत्नाद्री
कल्पवृक्षाय ते नमः सुवर्णमंडपायाथ पुष्प
काय महार्हते विमानाया ष्टरत्नाप सम्यक सिं
हासनाय च उद्यरादित्य संशोभिपद्माय त द्नं
तरं नमो मि धर्मज्ञानाभ्यां वैराग्याद्यम्नितः क्रमा
तऐश्वर्याय नमो धर्माऽज्ञानाभ्यां पुर्वत स्याग्र
वैराग्याय च तथा नैश्वर्याय नमो नमः संअर्क मं
डलाय हमु पर्युपर्व रिसर्वदा संत्वाय त्वसे नि
त्यं तमसे पिनमो नमः चं चंद्रमण्डलाये तिथ्या
त्वाध्यात्वा नमाम्य हं र म ग्निमंडलाय ति सप
ज्ञैव प्रयत्नन: विमंलोत्कर्षणी ज्ञानाक्रियायो
गाम्य इत्यं पिनमामि प्रही सत्याभ्यामीशानाये

दलान्तरे पूर्वादितोनुग्रहार्थे प्रणमामितदन्तर
म् नमो भगवते तद्धि ध्यावेतदनन्तरं सर्वभूताय
मनेचेतिवासुदेवाय इत्यपि अग्रेहनूमानस्सुग्री
वो भरतश्चविभीषणः लक्ष्मणोप्यंगदश्चैवशत्रु
घ्नों जाम्बवांस्तथा धृष्टिर्यंपंतोविजयोसुराष्ट्र
राष्ट्रवर्द्धनः अकोपो धर्मपालश्चसुमंतश्चाष्ट
मंत्रिणः एतेभ्योरामरूपेभ्यो युष्मभ्यं प्रणमा
म्यंहं इन्द्राग्नियमदेवेभ्यः सायुधेभ्योनमोन
मः नमोनिर्ऋतयेतुभ्यं वरुणायनमोनमःना
यवे धनदायाथरुद्रायेशायतेनमः ब्रह्मणे
नन्तरूपाय दिक्पालायात्मनेनमःतदायुधा
य वज्राय शक्तयेदण्डकाय चनमः खड्गाय
पाशाय ध्वजायच गदाय चत्रिशूलाया खुजा
पायचक्रायसततंनमः वशिष्टोवामदेवश्चजा
बालिर्गौतमस्तथाभरद्वाजः कौशिकश्चवाल्मीकि

नीरदस्तथानतंनीलंचगवयंगवाक्षंगंधमा
मादनंसुषेणंचापिमैंदंचद्विविदंचयजेत्क्रमां
तशंख्यचक्रगदापद्मशार्ङ्गबाणात्मनेनमःश्रम्
मतेनेमस्तुभ्यंविष्वक्सेनादिकाध्वयेसर्वेश्व
र्यस्वरूपायज्योतिषेसंततंनमःइतिप्रावर्णी
पूजाषोडशोपचारैर्वापंचोपचारैर्यथाशक्तिदेवा
नेपूजयित्वाश्रीरामपूजांसमारभेततन्मंडेरा
घवंध्यायेत्सूर्यकोटिसमप्रभमिंदीवरनिभंरमा
तंविशालाक्षंसुवक्षसंउद्यादित्यमन्दारत्नकु
ण्डलाभ्यांविराजितमसुनासंसुकिरीटंचसुक
पोलंसुचिस्मितंविज्ञानमुद्राद्विभुजंकंबुग्रीवं
सकुन्तलंनानारत्नमयेर्दिव्यैर्हीरेर्भूषितमव्य
यमविद्युत्पुंजप्रतीकाशंवस्त्रयुग्मधरंहरिंवी
रासनस्थंसंतानतरुमूलनिवासिनमहासुग
धलिप्तांगंवनमालाविराजितम्वामपार्श्वस्थि

तांसीतांचामीकरसमप्रभांलीलापद्मधरांदे
वींचारुहासांशुभाननांपश्यंतीस्निग्धयादृ
ष्ट्याकल्पाविराजितां छत्रचामरहस्तेनल
क्ष्मणेनसुसेवितंहनुमत्प्रमुखैर्नित्यंवानरैः
परिसेवितमस्तूयमानंऋषिगणैःसेवितंभरता
दिभिःसनंदनाभिश्चान्यैर्योगिवृंदैःस्तुतंसदा
सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञंयोगज्ञंयोगसिद्धिदमश्च
ऽनमनसारामंपूजयेत्सततंहृदि इतिध्यानं॥
आवाहयामिविश्वेशंजानकीवल्लभंविभुं
कौशल्यातनयंविष्णुंश्रीरामंप्रकृतेःपरं॥इत्या
वाहनं॥राजाधिराजराजेन्द्ररामचंद्रमहीपते
रत्नसिंहासनंतुभ्यंदास्यामिस्वीकुरुप्रभो॥इ
त्यासनं॥त्रैलोक्यपावनानंदनमस्तेरघुनाय
कपाद्यंगृहाणराजर्षेरामोराजीवलोचनः॥इ
त्यर्घ्यं॥परिपूर्णपरानन्दनमोरामायवेधसेगृ

हाणार्घंमयादत्तंकृष्णविष्णोजनार्दन॥ इतिअ
र्घं॥ ॐनमोवासुदेवायतत्वज्ञानस्वरूपिणेमधु
पर्कंगृहाणेमंब्राजराजायतेनमः इतिमधुपर्कं॥
नमःसत्यायशुद्धायबुद्धायज्ञानरूपिणेगृहाण
चमनंनाथसर्वलोकैकनायकः इत्यचमनंब्रह्मां
डोरमध्यस्यतीर्थैश्चरघुनंदनस्नापयिष्याम्य
हंभक्त्यासंगृहहाणजनार्दन॥ इत्यस्नानं॥ संत
प्तकांचनप्रख्यंपीताम्बरमिदंहरेसंगृहाणज
गन्नाथरामचंद्रनमोस्तुते॥ वस्त्रं॥ श्रीरामाच्यु
तयज्ञेशश्रीधरानन्तराघवब्रह्मसूत्रंसोत्तरी
यंगृहाणरघुनायकइतियज्ञोपवीतं॥ किरी
टहारकेयूररत्नकुण्डलमेखलाग्रैवेयकौस्तु
भोहाररत्नकंकणनूपुरौएवमादीनिसर्वाणि
भूषणानिनृपोत्तममयाहंदास्यामिसन्दत्तयासं
गृहाणजनार्दन॥ भूषणं॥ कुंकुमागरुकस्तूरी

कर्पूरोन्मिश्रचंदनं तुभ्यं दास्यामि विश्वेश श्रीराम श्वीकुरु प्रभो ॥ चंदनं ॥ तुलशी कुंदमंदार जाति पुन्नाग चंपकैः कदंब करवीरैश्च कुसुमैः शतपत्रकैः नीलाम्बुजैर्विल्वदलैः पुष्पमाल्यैश्च राघव पूजयिष्याम्यहं भक्त्या सं गृहाण जनार्दन ॥ पुष्पं ॥ अथांग पूजा श्रीरामभद्राय नमः पादौ पुजयामि राजीवलोचनाय गुल्फौ रावणान्तकाय जानुनी विश्वामित्रप्रियाय नाभिं परमात्मने नमः हृदयम् श्रीकण्ठाय नमः कंठं सर्वास्त्रधारिणे बाहू रघूद्वहाय मुखं वाचस्पतये पेउरु विश्वरूपाय जंघे लक्ष्मणाग्रजाय कटिं विश्वमूर्तये मेढ्रं पद्मनाभाय जिव्हां दामोदराय दन्तान् सीतापतये ललाटं ज्ञानगम्याय शिरः सर्वात्मने सर्वांग इत्यंग पूजा ॥ ताम्बूलं गृह्यतां राम कर्पूरादि समन्वितं ॥

ताम्बूलं॥ नृत्यगीतादिवाद्यानिपुराणपठनादि
भिः राजोपचारैरखिलैः संतुष्टीभवराघव॥ सं
तुष्टीकरणं॥ नमस्तेजानकीनाथ रामचंद्रमही
पते पूर्णानन्दैकरूपत्वं ब्रह्मणार्घ्यं नमोस्तुते॥
अर्घ्यं॥ मंगलार्थं महीपालनीराजनमिदंहरे स
ब्रह्मणजगन्नाथ रामचंद्र नमोस्तुते॥ नैराज
नं॥ मनोवाक्कायजनितं कर्म यच्छुभाशुभं
तत्सर्वं प्रीतयेभूयान्नमो रामाय शार्ङ्गिणे
अपराधसहस्राणि क्रियंतेहर्निशंमयादा
सोयमितिमांमत्वाक्षमस्वरघुनायक॥
इतिपुष्पांजलिम्॥ जानिकानि चपापानि
ज्ञाताज्ञातकृतानि च। तानितानि विनश्यं
तिप्रदक्षिणपदेपदे॥ प्रदक्षिणं॥ दुर्गमे
विषमे घोरे शत्रुभिः परिपीडिते निस्तारय
त्व सर्वपातकाद्दैत्यसे भवेत॥ नमस्कारं

॥ एवं यः कुरुते पूजां बहिर्वा हृदयेपि वा सकृत्पू
जनमात्रेण रामेण ब्रह्म भवेन्नरः एवं संपूज्य ब्रह्म मु
क्तरामोपनिषदाऽस्तवराजादीन् स्तोत्रेण यथा
शक्तिस्तुत्वा नित्यहवनसमारंभेत् अथातो नित्य
हवनविधिः ॥ विधिवद्विहिते कुण्डे स्थंडिले च
तुरश्रके आवाहनीयं गार्ह्यं वा लौकिकं वाग्निमु
ज्वलं प्राणीयामंत्रेण नैर्ऋत्ये कृष्णादौ संपरित्य
ज्य तदेभाशमलं त्रैणस्थापयेत्सुरतः सुधीः अ
न्याधानादिभिधं कर्म नित्यहोमे न विद्यते वीक्ष
णं मूलमंत्रेण शरेण प्रोक्षणं मतं तेनैव ताडनं द
र्भैर्वर्मणाभ्युक्षणं स्मृतं अन्वाधानाद्यर्थं स्व
रित्तीर्थं यथाविधिः प्राणानायम्य लक्ष्मीशं सा
गं सायुधमव्ययं सिंहासनं द्रव्यतोपस्य इति सं
कल्प वागयतः न्यासं कृत्वा प्रणीतं कुंभ राबाधा
यतज्जलैः मस्त साधन संभारं प्रोक्षयेन्मूलसं

ग्रतःपवित्रोल्यवनांतंतुकूर्यात्कर्मस्वगृह्यातः
सरुत्राचिंपेहृदयायचनमःस्वस्तिपूर्णायशि
रसेस्वाहाउत्तिष्टपुरुषायशिखायैवषट्धूम
व्यापिनेकवचायहुंसप्तजिह्वायनेत्रत्रयायधौ
षट्धनुर्धरायअस्त्रायफट्उंरंफट्ॐवैश्वा
नरजातवेदइहावहलोहिताक्षसर्वकर्माणि
साधयस्वाहा एवमावाह्यसमिधिक्षिप्त्वाग्निं
दीपयेधिमुॐचित्पिंगलहहनदहनहुतवहपचप
चसर्वज्ञाज्ञापयस्वाहाअग्निंप्रज्वलितंवंदे
जातवेदसमूर्जितंहिरण्यवर्णममलंसमिधं
सर्वतोमुखंनतः षोडशोपचारं प्राणंचमुच्चार्य
सकलपगत्कारकवन्हेगर्भाधानादिकाःक्रि
याःसपद्यतास्वाहामणिबंधौसमौकृत्वाक
रौप्रवितनतांगुलीमध्यमेमिलितेकृत्वातन्मध्ये
गुष्टकौक्षिपेतमुद्रेयंसप्तजिव्हाख्यादर्शयेज्ज्ञा

तवेधसेहिरण्यगर्भनारक्ताकृष्णापीताप्रभासि
तासर्वसिद्धप्रभापुत्रया जिह्वासप्तविभाव
सोः पीठतासूनयालेप्रागंभेरष्टमूर्तिभिः स्त
दनुभूयश्च शानमखाद्यैः विधिनाथ हिरण्य
रेतसं प्रयजेनजातवेदाः सप्त जिह्वारुपवा
हनमेवञ्चअश्चोर जंसेन्त्रश्च सवैश्वानरए
वचकौमारतेजाश्चतथा विश्वदेवमुखानुगौ
स्पुरष्टमूर्त्तयेदिक्षुप्रठनयेपद पूर्विका मध्ये
त्ताजाशनमे ध्यं पूजामंडलतः प्रभुंश्चावाह
येद्गामवंद्वंपरिवारसमन्वितंमंत्रंन्यासंविधाय
स्मिप्रागवन्मुद्राप्रदर्शयेतगंधपुष्पैः धूपदीपै
साग्निंसंपूजयेत्प्रभुंश्चावाहयेद्रामेवंद्वंपरि
वारसमन्वितद्रव्यद्रव्यंतेवाभावेजुहुयान्मृग
मुद्रपानागवल्लिदलंपूजातुलसीगर्भयाथवा
श्रास्त्राज्यभागगथाहोरौकुर्यादाज्यान्हुतंहविः

कवचेनाबगुंठ्येन्द्रस्त्रेणपरिरक्ष्ययेन्नसंप्रोक्ष्य
मूलमंत्रेणाभिमंत्र्य जुहुयाहुधः इत्यग्निमुखं
प्रसक्तिवाजंमंत्रेप्राज प्रास्वाहावदेत्ततःमंत्रांत
स्याहुतिक्षेपस्त्यागःसर्वाहुतिष्वपिषोडशाहुतिंदेवं
यजेद्वारेशशक्तिकं द्वारपीठगदेवेभ्यःएकैक
स्याहुतिंततःगणेशादि पानिशस्वति द्वारदेवताश्च
देवतारिशांत्पीठदेवाश्चमंडुकादयःप्रथशानप्रांत
देवामर्वांतिल्हदयादयःसवेष्टनवत्यधिकंशतंदे
वाश्रकीर्तिताःगणेशायसविनेयत्रेचमहेशायहि
येतथाचतुर्णामाहुतिंदत्वाततोब्रह्मार्पणाहुतिः
इतः पूर्वंप्राणबुद्धिदेह धर्माधिकारतःजाग्रत्स्व
प्नसुषुप्तावस्थासुमनसावाचाकर्मणाहस्ताभ्यां
मुदरशिध्याचयत्कृतंयस्मृतं तत्सर्वंब्रह्मार्पणं
भवतुॐभूः भुवः स्वः स्वाहा इदंब्रह्मणेनमःमूमु
लमुच्चार्यसंगायसायुधायसवाहनाय सपरिवारण

यथाशक्ति कामय श्री सीतापतये स्वाहा श्रीरामा
य इदं नमः इति पूर्णाहुतिं दत्व कृत्वा परिसमूहनं
त्र्यायुषंजमदग्नेरिति मंत्रेण भस्म धारयेत पूर्णपात्रं
पूर्यतोयैः सप्तकृत्वोभिमंत्रितैः आत्मानमभिषिंचे
त्केसदर्वैः तुलसीदलैः चिकीर्षपुष्पांजलिशुद्ध
भावः कुर्यात्स्मरणं हुतभुक मुखाय उद्वास्य वन्हे
स्त्रिदशाधिपेभ्यो बलिं हरेद्भैरवयोगिनीभ्यः नित्य
होमे मनस्त्येवमाहुतीनां शतद्वयं मविंशत्यधिक
मंगानामग्निस्थानां चाहुतित्रयं जयस्याथ दशांसे
न हुनेदाज्यप्लुतं हविः तद्दशांसेन मूलेन गां घप्
यायुतैर्यैलिः सांगरामं तर्पयामित्येवं तर्पयेत्त
न्तु तद्दशांसेन तत्तोयैः सप्तकृत्वोभिमंत्रितैः आत्मा
नमभिषिंचेत्केशदर्वैः स्तुलशीदलैः इति नित्यहो
मः पूर्वोक्तविधिसे गृहमेधी धर्मौकोऽर्च्चयाहवन
श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं दानं यथाशक्तिनान्यद्धमस्व

वणोंक्तिकरना ७ चितहै ग्ररु रहस्याश्रममे
सीकेवलं श्रीरामचन्द्रार्चनइत्यादि विहित
है इतिसंक्षेपतो गृहस्याश्रम धर्माख्यानसम्पू
र्ण॥ ॥ ग्रथातो वाणप्रस्थ धर्मं व्याख्य मिवा
णप्रस्थ तीसरा ग्राश्रमहै इसमें चाहिये कि भा
र्याकोपुत्रकोसोंपि ग्रथवा संयुक्त वनमे जाइक
रकंदमूलादि भोजनकरै वल्कलाम्बरवि ण
शाइ ग्रीषममे पञ्चाग्नि शरदमेजलशायनी इ
त्यादि धर्म है ग्ररु श्रीरामचन्द्रयजनकरै सोश्लो
कलिखे जाते है वनेविविक्तः पुत्रेषु भार्यान्यस्य
सहैव वा वनएव वसेच्छान्तस्तृतीयं भागमायु
षः कंदमूलफलैर्धन्यैर्मेध्यै र्ईतिं प्रकल्पयेतव
सीतवल्कफलं वासस्तृण पर्णाजिनानि च के
शरोमनखश्मश्रुमलानिभृयाद्दतः न धावेद
प्सु मज्जेत त्रिकालं स्थंडिलेशयः ग्रीष्मे तप्येत प

स्त्वगनीन्वधीस्वासार षाड्ड सेभ्याकं टमगनःश्रि
ारपवंदृतस्तपश्चरेतश्रग्निपकसमश्नीयात्का
लपकमथापिवाउलूखलोष्मकुट्टोवादंतो
लूखलएववास्वयंसंचिनुयात्सर्वमात्मनोवृ
तिकारणंदेशकालवलाभिज्ञोनाददीतान्य
दाहृतंवनैश्चरूपरोडाशैर्निर्वपेत्कालचोदि
ताननतुश्रौतेनपशुनामांयजेतवनाश्रमी
अग्निहोत्रंचदेशंचपूर्णमासंचपूर्ववतचातुर्मा
स्यानिचमुनेराम्नातानिचनैगमैः एवंचीर्णेन
तपसामुनिर्धर्मनिसंततः मातपोमयमाराध्य
ऋषिलोकादुपैतिमांइतिश्रीमद्भागवतेएका
दशस्कंधेभागवद्वाक्यंइतिसंक्षेपतोवाणप्र
स्थाश्रमधर्मसः अधातोसन्यस्तधर्मंव्याख्यानं
सन्यस्ताश्रमजोवैराग्योदयकोकहतेहैसन्यस्त
मेंमुनिवस्त्रकौपीनदराडकमराडलधारनकरना

जीवावलोकन करचलनाजलपजलपीना
सत्यवाक्यमनप्रउढुं निशास्त्रधर्मोक्तकरना
निःसंग रहना सर्वभूतस्थित रामचन्द्रको मानना
इंद्री मन निरह कामक्रोध मद लोभादि त्यागना
नुमित्र शीतोष्ण सुखदुःख समजानना उचित
है प्रमाणं॥ विभ्याज्येन्मुनिर्वासः कौपिनाच्छा
दनं परं त्यक्ते नदण्डपात्राभ्यामन्यत्किंचिदनाप
दि दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिवेज्जलं सत्य
पूतं वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत मौनानीहानि
लाया भादण्डाव देह चेत सस्तहेते तपस्ये संत्यं
डगवेणु भिर्नभवेद्यतिः भिक्षां चतुर्षे वर्णेषु वि
गर्हीन्वर्ययेश्चरेत सप्तागारान संक्लृप्तांस्तु ष्ये
ल्लब्धेन तावता वहिर्वलाशयं मत्वा तत्रोपस्पृ
श्य वाग्यतः विभज्यपावितं शेषं भुंजीताशेषमा
हृतं एकश्चरेन्महीमेतां निःसंगः संयतेन्द्रियः

आत्मक्रीडआत्मरतः आत्मवान्समदर्शनः त
स्मान्नियमयषड्वर्गमद्भावेनचरेन्मुनिः विरक्तः
क्षुल्लकामेभ्योलब्ध्वात्मनिसुखंमहत ज्ञाननि
ष्ठोविरक्तोवामद्भक्तोवाऽनपेक्षकः सलिंगाना
श्रमांस्त्यक्त्वाचरेदविधिगोचरः बुधोबालकव
त्क्रीडेत्कुशलोजडवच्चरेत वदेदुन्मत्तवद्विद्वान्गो
चर्यांनैगमश्चरेत वेदवादरतोनस्यान्नपाषंडीनहैतु
कः शुष्कवादविवादेनकिंचित्पक्षंसमाश्रयेत
इतिश्रीमद्भागवतेएकादशस्कंधेभगवद्व
चयंउद्धवंप्रतितथाच॥ बहूनांजन्मनामंतेज्ञा
नवान्मांप्रपद्यतेवासुदेवः सर्वमितिसमहात्मा
सुदुर्लभः यदाहिनेन्द्रियार्थेषुनकर्मस्वनुषज्जते
सर्वसंकल्पसंन्यासीयोगारूढस्तदोच्यते जिता
त्मनः प्रशांतस्यपरमात्मासमाहितः शीतोष्णसुख
दुःखेषुतथामानापमानयोः ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकू

रस्थोविजितेन्द्रियः इतिश्रीभगवद्गीतायां ॥ इत्या
दिपूर्वोक्तप्रमाणोंसेसंन्यासियोंकोभीश्रीराममय
संसारजाननाचाहियेक्योंकिभगवद्वाक्याहैबहुनां
जन्मनामांतेज्ञानवानमांप्रपद्यतेवासुदेवः सर्व
मितिसमहात्मासुदुर्लभः इतिसंक्षेपतोसंन्यस्ता
श्रमाख्यानेसम्पूर्णं इतिजाननाचाहिएकिसक
लवेदसास्त्रादिप्रमाणोंसेकल्यानसेवाइरामस्मरण
केअन्यत्रनहिहैएवमैंअल्पबुद्धिनम्रपूर्वकसबसेप्रा
र्थनाकरतूहौंकीआपलोगअपनेकल्यानकीपथानु
कूलहूजिए श्रीराघोसबभीकृपाकरेंगेदेखोमुझेऐसे
पापिपरकृपाकरतेहैतोआपसबतोपवित्रहैंएहसंग्र
हजोमैंनेकियाप्रथममेराअभिलाखथाकीसंस्कृतमें
करौंपरन्तुएहसोचाकीविज्ञानतोस्वतःसर्वज्ञहैएहतो
अल्पबुद्धिकार्यार्थहैतवभाषामेंकरनाउचितजाना
इतिश्रीपरब्रह्मरामजानकिकेचरणाम्बुजकोलक्ष्यावं

दनकरतुहैंजेस्केकृपाकरिइससेयहकार्यसम्पूर्ण
हुआतत्पश्चातलक्ष्मणादिकतथाहनुमानआदिक
रामभक्तभावीयेंकोअरुश्रीस्वामीरामदासजीजगु
रुजिनकेकृपाहमकोऐसेसठपरप्रतीतिभईकिजिस्सेराम
तत्वज्ञानआयातदग्रेममाताजीजोएसकालमेसाक्षा
तअनुसूयाहैंअरुममपिताश्रीठाकुरजोध्यावकलसा
क्षातधर्मरूपहैंसर्वज्ञपरंभागवतश्रीसीताराम
पदाम्बुजारैंश्रीकलिकलुषविनासकश्रीस्वामीराम्या
न्हरामभक्तिमेलीनरहतुहैअतिसेममअल्पबुद्धिपरकृ
पाकीएकीमुझकोबाल्यावस्थासेविद्यापढ़ायाअरुजोकु
छमुझकोपरिज्ञानहुआउन्हीकीकृपाहैअबसबसेएहप्रार्थ
नाहैकीमेरीविनतीपरचितदेकरयौआपनदासबालकजा
निकैइसकोदेखैंअरुजोसोधेजोगहोइवहसोधैंमुझकोजोअ
यासोलिखाइतिश्रीमुमुक्षुरत्नेमहावीरप्रसादरामप्रतावनाराय
णकृतेसम्पूर्णंसुभंभुयातश्रीरामायनमः ॥

श्रीरामचन्द्रस्य कृपाभिलाषी श्रीमन्म
हावीरप्रसाद सिंहः ।। निष्कंठकं चैव भवा
ब्धिपोतं मुमुक्षुरत्नं चचकार दिव्यम् ।।

सं. १९२९ माघशुक्ल
पौर्णमासी